

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 15

अंक-8

जुलाई-II, 2014

पाक्षिक

माउण्ट आबू

₹ 8.00

‘समाज में मूल्यों की पुनर्स्थापना में जन-संचार माध्यमों की भूमिका’

अरावली की हरी-भरी वादियों के मध्य बसे आध्यात्मिक उर्जा के केन्द्र ज्ञानसरोवर प्रांगण में मीडिया जगत से जुड़े महानुभावों ने त्रिदिवसीय मीडिया सम्मेलन में सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा देने पर किया मंथन

ज्ञानसरोवर। तमाम दबावों के बावजूद भारतीय मीडिया सकारात्मक चिंतन देने की स्थिति में है। मूल्यों पर चिंतन न केवल भारत बल्कि विदेश में भी हो रहा है। इससे विषय की गंभीरता का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज के मीडिया प्रभाग द्वारा ‘समाज में मूल्यों की पुनर्स्थापना में जन-संचार माध्यमों की भूमिका’ विषय पर आयोजित मीडिया सम्मेलन में प्रेस परिषद के सदस्य एवं इंडिया न्यूज टी.वी. के सम्पादक राजीव रंजन नाग ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि चरित्र व आचरण हमें विरासत में मिले हैं, लेकिन दुःख इस बात का है कि आजादी के बाद की तीसरी पीढ़ी को इससे कोई संरोकार नहीं है। देश में आठ सौ बीस टी.वी. चैनल्स और पच्चीस हजार अखबार बाजार में हैं, लेकिन शिक्षित लोगों की संख्या केवल पच्चीस प्रतिशत तक सिकुड़ कर रह गयी है। जब मीडिया में माल बेचने की प्रतिस्पर्धा चल रही हो तो मूल्यों का ध्यान रखने



ज्ञानसरोवर। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए राजीव रंजन नाग, ओमप्रकाश, ब्र.कु. करुणा, मधुकर द्विवेदी, डॉ. निर्मला, प्रो. कमल दीक्षित, ब्र.कु. कार्निंक, डॉ. पी.सी. पताजलि तथा अन्य।
की जिम्मेवारी भला कौन निभायेगा।
के.जी. सुरेश, निदेशक, जी युप ग्लोबल फाउण्डेशन ने कहा कि सिनेमा और टी.वी. सौरियल हमारे संस्कारों का प्रतिरोध करने वाली सामग्री परोस रहे हैं, जिसका समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। पाश्चात्य सभ्यता का प्रसार

करने वाली सामग्री पर अंकुश लगाकर मीडिया देश व समाज को सही रास्ता दिखा सकता है।
दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका ने मीडियाकर्मियों का आह्वान करते हुए कहा कि भारत में रामराज्य पुनः लाने में मुख्य भूमिका निभाएं।

ब्र.कु. ओमप्रकाश, अध्यक्ष, मीडिया प्रभाग ने कहा कि शिक्षा संस्थान अच्छे अच्छे डॉक्टर और इंजीनियर तो बना रहे हैं लेकिन चरित्रवान नागरिक बनाने पर उचित ध्यान नहीं दिया जा रहा। वैज्ञानिक प्रगति ने मीडिया को पहले से अधिक शक्तिशाली तो बना दिया लेकिन अपराध का ग्राफ भी उतनी ही तेजी से बढ़ रहा है।

ब्र.कु. करुणा, अध्यक्ष, मल्टी मीडिया ने कहा कि देश का उत्थान चरित्र के उत्थान के बिना संभव नहीं। युवा वर्ग में अच्छे संस्कार विकसित करके ही भारत को विश्व गुरु बनाना संभव होगा।

मधुकर द्विवेदी, संपादक, संवत् शिखर रायपुर ने कहा कि जो शांति तमाम अच्छाइयों का आधार है उसे प्रसारित करने में ब्रह्माकुमारी संध्या समूचे विश्व में ध्वजावाहक बनकर उभर आयी है।

ब्र.कु. डॉ. निर्मला, निदेशिका, ज्ञानसरोवर ने कहा कि श्रेष्ठ भूमि कहे जाने वाले भारत में अब हर कोई विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे पतन से चिंतित है।

प्रो. कमल दीक्षित, संयोजक, मीडिया मूल्य अभिक्रम समिति ने कहा कि बदलाव की चाहत हर कोई महसूस करता है। बदलाव की बयार कितनी तेजी से बह रही है इसका उदाहरण हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव से मिलता है। मीडिया सामाजिक बदलाव के अभियान को आगे बढ़ाने में उल्लेखनीय भूमिका निभा सकता है।

प्रभाग ने कहा कि अन्ना हजारे द्वारा भ्रष्टाचार के विरुद्ध बजाए गए बिगुल व नई सरकार के गठन में मीडिया की अहम भूमिका रही है।

डॉ. मानसिंह परमार, विभागाध्यक्ष, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर ने कहा कि न्यायपालिका, कार्यपालिका व विधायिका से जब विश्वास उठ रहा है तो मीडिया पर लोगों की निगाहें टिकना स्वाभाविक है। मीडिया को श्रीकृष्ण की भूमिका में आना होगा जिन्होंने धर्म की पुनर्स्थापना की थी।

वेब दुनिया के संपादक जयदेव कर्निक ने कहा कि पिछले एक दशक से मीडिया की भूमिका पर सबाल उठ रहे हैं। मीडिया को आईना देखकर महसूस करना चाहिए कि उम्मीदों का दीया सिर्फ उन्हीं में जल रहा है।

डॉ. पी.सी. पताजलि, पूर्व उपकुलपति, पूर्वांचल विश्वविद्यालय ने कहा कि मीडिया का स्वरूप बदल गया है। समाचारपत्रों में अब समाचार ढूँढ़ने पड़ते हैं। हमें यह सोचना होगा कि समाज बारूद के ढेर पर बैठा है और इसे विस्फोट से बचाने का दायित्व मीडिया ही निभा सकता है।

मीडिया प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. शान्तनु ने सभी का आभार प्रगट किया।



गणेश वंदना की प्रस्तुति देते हुए स्टेप अप डांस है। बदलाव की बयार कितनी तेजी से बह रही है इसका उदाहरण हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव से मिलता है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित सांस्कृतिक संध्या पूर्णरूपेण भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की महिमा को उजागर करने पर केन्द्रित रही। स्टेप अप डांस युप हुबली द्वारा - शेष पेज 9 पर...

अध्यात्म से समाप्त होंगी सामाजिक कुरीतियां-दादी

ज्ञानसरोवर। समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने के लिए अध्यात्म सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन है। भारतीय

करने में सक्षम है।
उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज के समाज सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित स

चिंतकों ने भारत की संस्कृति को विश्व में फैलाने का जो भागीरथ कार्य किया था, आज उस परिकल्पना को फिर से प्रगतिशील बनाए रखने के लिए समाजसेवकों को आगे आना होगा।

ब्र.कु. संतोष, अध्यक्ष, समाज सेवा प्रभाग ने कहा कि सच्चा समाज सेवक वही है जो मानसिक स्तर पर भी समाजसेवा के नियमों से समझौता नहीं करे। समाज परिवर्तन के लिए मनुष्यों के हृदय परिवर्तन की जरूरत है जिससे लोगों में परस्पर वैमनस्य को भावनाओं को भुलाकर प्यार, सौहार्द से मिलकर समाज को उन्नति के पथ पर ले जाना होगा।

नंद कुमार चौहान, सांसद, मध्यप्रदेश खडवा ने कहा कि मानवीय अंतर्द्वन्द्व से ही समाज का पतन हुआ है। ब्रह्माकुमारी संगठन द्वारा समाज उत्थान का जो कार्य किया जा रहा है वह समूचे विश्व के



ज्ञानसरोवर। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. संतोष, प्रकाश पोडवाल, उपाध्यक्ष, नेपाल बैंक ऑफ कॉमर्स, ए.एन. जितल, पूर्व जस्टिस, पंजाब हरियाणा उच्च न्यायालय, ब्र.कु. अमीरचंद, ब्र.कु. प्रेमसिंह, वाई.पी. दास, रोटीरी प्रांतपाल, गुणम तथा अन्य।

संस्कृति ही दुनिया में त्याग, बलिदान और तपस्या द्वारा श्रेष्ठ समाज का निर्माण

मेलन में राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि प्राचीन

पिछले भाग में आपने जाना कि कैसे इच्छाओं को पहचानें, कैसे दूढ़ें उस फीलिंग या इमोशन (भावना) को जो हमारे हित में हो या फिर दूसरों के हित में, उसे करो। यदि उसकी फीलिंग बुरी है, तो भी करो यदि वह आपके लिए अच्छा है। अब इसके थोड़ा आगे बढ़ते हैं कि क्या मांगने से या law of attraction की पावर के प्रयोग से कुछ मिलता है? कहने का अर्थ बिल्कुल साफ है कि, हम कार्य को करने की इच्छा से करते हैं, या काम समझ करते हैं या फिर उसे प्यार करते हैं।

मांगना vs योग्यता: - एक होता है मांगो, क्या मांगने से सबकुछ मिलता है? यदि मान लो कि आप किसी कंपनी के C.E.O. हो, एक सॉफ्ट प्रोमोशन के लिए खाली है और प्रोमोशन लिस्ट में दस लोग हैं तो आप किसे उन्नति देंगे, उसे जो बार-बार आकर कहता है कि सर जरा देख लेना, हो सके तो कर देना। दूसरा, उसे जो आकर्षण के सिद्धान्त के प्रयोग में ला रहा है या फिर उसे जो ज्यादा योग्यता

रखता है। निश्चित रूप से जो ज्यादा योग्यता रखता है उसे ही आप प्रोमोशन या प्रोन्नति देंगे। ये तो हम सबकी बात है, जो परिस्थितियों के आधार पर थोड़ा unfair भी हो सकते हैं, परन्तु भगवान जैसा C.E.O. हो तो वह कैसे गलत कर सकता है, वो तो बिल्कुल ही निष्पक्ष व्यवहार करेगा। इसलिए वो उसे ही देता है जो योग्य है। तो क्या करना है, अपने आप को योग्य बनाना है। जो भी लोग law of attraction के पावर की बात कर रहे हैं, वे कह बिल्कुल ठीक रहे हैं, लेकिन example गलत दे रहे हैं।

आकर्षण का सिद्धान्त कहता है, you do not get what you want, you get what you are, अर्थात् आप वो प्राप्त नहीं करते जो आप चाहते हो, आप वो प्राप्त करते हो, जो आप हो। क्या है आप? इस प्रश्न का उत्तर बहुत सहज है। आप खुद के belief हो (मान्यता) हो। आपने अपने को मान रखा है कि मैं ऐसा

आकर्षण बनाम प्रेम

ही हूँ मैं मूर्ख हूँ, मुझे कुछ नहीं आता, ये सारी बातें आपने अपना रखी हैं। कुछ लोगों की मान्यता है कि इच्छा-शक्ति (will power) ही belief है। शायद नहीं। उदाहरण के लिए आपकी इच्छा है कि मुझे एक ऑपरेशन करना है। दूसरा, स्टूडेंट अभी-अभी पास आऊट हुआ है मैडिकल कॉलेज से, उसकी इच्छा भी है कि मैं जाकर ऑपरेशन करूँ। तीसरा व्यक्ति ऐसा है, जिसे 15 साल का अनुभव है, लेकिन उसकी कोई इच्छा नहीं है। तो सभी प्रायिकता उसे ही देंगे जिसे आप अनुभवी मानते हैं। अनुभव हमें स्थिर बनाता है।

तो क्या करना है, या फिर क्या हुए आप? मान्यता या विश्वास (ज्ञान तथा अनुभव) हैं आप। जिसे भी ज्ञान है लेकिन अनुभव नहीं है, तो वह कैसे मानेगा कि आपको इस कार्य में महारत हासिल है। इसलिए

तो लोग कहते हैं कि भगवान में आपका विश्वास है, तो उनका कहना उचित है कि नहीं, क्यों, क्योंकि अनुभव नहीं किया ना, और यदि अनुभव कर लिया तो कहेंगे हाँ, मेरा परमात्मा में विश्वास है। विश्वास आपके अंदर छुपे हुए ज्ञान व अनुभव से आता है। इसी को श्रीमद्भगवद् गीता में कहा गया है, कर्म किए जा भाई, फल की इच्छा ना कर। लेकिन लोगों का इसके विपरीत विचार होता है। अरे! फल मिलने का ही एक माध्यम है ज्ञान तथा अनुभव। अर्थात् योग्यता। भगवान ने कहा कि आप आत्मा हो, उसका ज्ञान लो तथा अनुभव करो। इसके बाद सारी चीजें आपके पास स्वतः ही आ जाएंगी।

तो अब क्या बदलेंगे आप? अब आप अपनी मान्यताओं और विश्वासों को बदलेंगे। जब तक आपका विश्वास नहीं बदलेगा तब तक कुछ नहीं बदलेगा। एक बात ध्यान देने योग्य है कि यदि मांगने से

विश्वास बदलते तो सबसे शक्तिशाली विश्वास भिखारियों के होते। तो अपने आपको योग्य बनाना है। अब हमारा ध्यान खुद को बदलने में हो, न कि मान्यताओं को बदलने में। जीवन की परिस्थितियों को नहीं, दुनिया को नहीं, लोगों को नहीं, खुद को बदलने में। आप देखिए न कि, कितना विरोधाभासी है कि एक तरफ बात की जा रही है कृपा (gratitude) की, और दूसरी तरफ बात करते हैं मांगने की। दोनों अलग-अलग चीजें हैं। अगर आपको भगवान से सुख मिला या नहीं मिला, दोनों अच्छा है क्योंकि दोनों में ही कृपा है, कल्याणकारी है। तो बस जाने दें। अब लोग कहेंगे इससे तो उन्नति ही नहीं होगी। नहीं, इससे उन्नति तो नहीं रकेगी क्योंकि उन्नति और मांगना, ये दोनों अलग-अलग चीजें हैं। आपको गाड़ी मिलेगी, घर मिलेगा लेकिन मांगने से नहीं मिलेगा, अपने आपको योग्य बनाने से मिलेगा। - क्रमशः

ब्र.कु. अनुज, डिफेंस कॉलोनी दिल्ली

PEACE OF MIND - TV CHANNEL

Cable network service

"C" Band with MPEG receiver
Frequency: 4054,
Polarisation: Horizontal, Degree: 83
Symbol: 13230, Satellite: INSAT 4A,
Peace of Mind: (Vision Shiksha)

DTH Services

Videocon D2H: Channel no. 497,
Reliance Big TV: Channel no. 171

Smart Phone Service

Android | Blackberry | iPhone | iPad
Tablet | Visit: <http://pmtv.in>

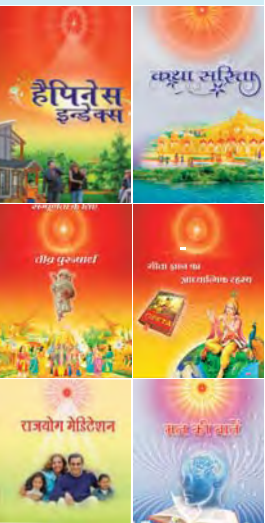
Mobile Audio Service

Airtel - 55231 - Rs.2 per day
Vodafone - 552013 - Rs 1 per day
Reliance - 56300123 Rs 1 per day
अगर आप पीस ऑफ माइंड चैनल चालू करवाना चाहते हैं तो अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9414151111, 8104777111

सूचना- आम शान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने व पत्रकारिता के अनुभवी भाइयों की आवश्यकता है। ई.मेल, वेबसाइट तथा सॉफ्टवेयर की भी जानकारी हो। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें-

Email- mediabkm@gmail.com

M-8107119445



प्रश्न: - मैं एक छोटी ब्रह्माकुमारी हूँ, छोटी-छोटी बातों में उलझ जाती हूँ, व्यर्थ संकल्प तेज़ चलते हैं। छोटी परिस्थितियाँ भी बड़ी लगती हैं, संतुष्ट नहीं रह पाती। इन सभी बातों से छुटकारा पाने के लिए क्या पुरुषार्थ करें...?

उत्तर: - सबसे अच्छी बात है कि आपको अपनी स्थिति का ज्ञान है, जबकि आप कुछ ईश्वरीय को ही राइट समझते हैं। निःसन्देह यह स्थिति अति कमजोर स्थिति है। ऐसी स्थिति से तो कोई भी मनुष्य संतुष्ट नहीं रह सकता और ना ही उसका ये संगमयुगी जीवन सफल होता है।

स्वयं के विचारों को महान बनाना है व योगबल से अपनी स्थिति को शक्तिशाली बनाना है। स्वयं को एकरस व अचल-अडोल बनाने के लिए आँख खुलते ही ये संकल्प अन्तर्मन में कई बार भरें... मैं एक महान् आत्मा हूँ... मुझे भगवान मिल गया, मुझे संपूर्ण सत्य ज्ञान मिल गया, मैं तो सबको उल्लसित मिटाने वाली हूँ... मैं शिव-शक्ति हूँ... ये परिस्थितियाँ मेरे सामने कुछ भी नहीं है... मैं तो त्यागी हूँ, तपस्वी हूँ। पहले 10 मिनट बार-बार ये संकल्प करें... इसे 21 दिन तक अवश्य करें।

सारे दिन में प्रति घंटे दो बार स्वमान याद करें... मैं महान आत्मा हूँ और मैं मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ... इससे आपका चित्त शांत हो जायेगा। जितना-जितना स्वमान बढ़ेगा... आप बड़ी बनती जायेंगी व परिस्थितियाँ कमजोर पड़ती जायेंगी। **प्रश्न:** - कई बार मुरली की धारणा करने में संकोच रहता है कि कहीं धारणा कर, पूरा न कर सका तो... सौ-गुना पाप तो नहीं लग जायेगा। क्या धारणा की प्रतिज्ञा कर उसे पूरा न करने से ज्यादा पाप, उसे बिल्कुल न धारण करने से सलाता है? मैं डबल माई-ड रहता हूँ कि धारणा करूँ या न करूँ?

उत्तर: - आपका स्वयं में संशय आपको शक्तिहीन कर रहा है। प्रतिज्ञा में बल होता है व परमात्मा बल मिलता है। धारणा ही नहीं करेंगे तो पतित ही रह जायेंगे, पावन कभी भी नहीं बन पायेंगे। सौ-गुना पाप का भय हजार-गुना पाप कराता है। इसलिए इस विश्वास से सबकुछ धारणा करो कि अब मुझे इस धारणा से कोई हटा नहीं सकता क्योंकि मेरे साथ परमात्म बल है। धारणा के बीज को योग का पानी भी दो। बिना योग अन्ध्यास के बुद्धि शुद्ध नहीं



मन की बातें
- ब्र.कु. सुर्य

होती व बिना बुद्धि के शुद्ध हुए धारणा की नहीं होगी। स्वयं भगवान का आना हुआ है, हम आत्माओं को सबकुछ धारणा कराने। उसने ही कहा है, पवित्र बनने की प्रतिज्ञा करो। सो करनी है। पहले ही प्रतिज्ञा टूटने का भ्रम नहीं पालना है। जितने दिन भी अच्छी धारणा रहेगी, उतना ही श्रेष्ठ भाग्य बनेगा। प्रतिज्ञा टूटने के भय से धारणा ही न करना अति कमजोर आत्मा की निशानी है, परन्तु आप तो मास्टर सर्व शक्तिवान हो।

प्रश्न: - मेरा एक 16 वर्षीय भाई है। मैं चाहता हूँ कि व संपूर्ण पवित्र बने, बुरे संग में आकर कलियुगी युवक न बनें, मैं उसे कैसे मदद कर सकता हूँ? **उत्तर:** - आपके मन में आपके भाई के प्रति यह शुभ-भावना प्रशंसनीय है क्योंकि आजकल तमोप्रधान समय है, वातावरण ही तामसिक है, युवकों का उससे मुक्त रहना... सहज काम नहीं है। उसका पवित्र रहना, उस पर ही निर्भर करेगा। उसे ज्ञान-योग कितना अच्छा

लगता है, उस पर सारा आधार है। फिर भी आप उन्हें ज्ञान दें, योगी बनायें और सात्विक भोजन खिलायें। घर के माहौल को सात्विक बनायें। घर में सत्य साहित्य ही हो। जब भी आप उसे देखें तो इस दृष्टि से देखें कि वो एक पवित्र आत्मा है, इससे उसे काफी मदद व बल प्राप्त होगा। हो सके तो प्रतिदिन उसे आधा घंटा योग का दान अवश्य दें।

प्रश्न: - भगवान को किसने बनाया और उसने ये ऐसा संसार क्यों बनाया? क्या इस दुनिया को देखकर भगवान को दुःख नहीं होता, यदि होता तो तो वह सबके दुःख दूर क्यों नहीं करता? क्या सभी को दुःखी देखकर उसे मज़ा आता है? **उत्तर:** - हमें पहले ये जानना चाहिए कि हमें किसने बनाया है? प्यारे बन्धु... आत्मा, परमात्मा व प्रकृति तीनों ही

अविनाशी सत्ता हैं, इनका कोई निर्माण नहीं करता अतः यह प्रश्न ही गलत है। भगवान ने यह संसार बनाया है। उसने जब यह संसार बनाया तो दुनिया स्वर्ग थी और मनुष्य देवता था, वहां दुःख, अशांति शब्द ही नहीं थे, सबकुछ सम्पूर्ण था। अब जो दुनिया का हाल है, यह पांच विकारों के कारण हुआ है। दुःख मनुष्य के पाप कर्मों का फल है। यह दुःखी संसार भगवान की नहीं, माया अर्थात् पांच विकारों की रचना है।

अपने वक्तों को दुःखी देखकर भगवान अब इस धरा पर आया है और वह सत्य ज्ञान दे रहा है। उसे पाकर ही दुःख समाप्त हो जाता है। दूसरों के दुःखों में भगवान दुःखी नहीं होता, बल्कि उसे रहम आता है। आप भी उसका ज्ञान लेकर दुःखों से मुक्त हो जाओ। भगवान को यह दुःखी दुनिया देखकर मज़ा नहीं आता, वह तो दुःख-हता है, अब सबके दुःख हरने आया है और महाविनाश के द्वारा इस दुःखी दुनिया को समाप्त कर देगा और धरा पर देव-युग का आरम्भ

होगा।

प्रश्न: - कई लोग मोक्ष चाहते हैं, कोई मुक्ति के मुमुक्षु हैं। कोई कहते हैं कि आत्मा परमात्मा में लीन हो जायेंगी तो कोई कहते हैं मुक्ति से लौटना पड़ेगा। कोई कहते हैं मुक्ति में हम परमात्मा के साथ रहते हैं, वहां परमानन्द है तो कोई कहते हैं कि वहां कोई अनुभूति नहीं है - सत्य क्या है?

उत्तर: - एक बार हमने किसी मुक्ति प्रेमी से पूछा कि आप मुक्ति क्यों चाहते हैं? तो बोले मुक्ति में हम परमात्मा के समीप परमानन्द में रहेंगे, इसलिए मुक्ति चाहते हैं। हमने पूछा कि आप तो कहते हो कि भगवान हमारे अन्दर ही है, तब उसे छोड़कर आप कहाँ उसके समीप जाओगे? बेचारे विचार मन हो गये। जबकि स्वयं भगवान को भी इस धरा पर आना पड़ता है अर्थात् उसे भी मोक्ष नहीं है, तब भला अन्ध को मोक्ष कैसे मिलेगा? आत्मा एकदम है, वह बिना एलेक्ट्रॉन नहीं रह सकती और यदि आत्मा, परमात्मा में लीन हो जाए तो आत्मा का अस्तित्व ही लोप हो जाए, जबकि आत्मा अविनाशी है उसका अस्तित्व सदा ही है। वास्तव में आत्मा मुक्ति में मुक्तिधाम में परमात्मा के पास ही रहती है, वहां क्योंकि आत्मा, शरीर रहित है, इसलिए उसकी मन और बुद्धि निष्क्रिय रहती है, यही कारण है कि वहां कोई अनुभव नहीं है, परन्तु सभी में दिव्य अनुभूति समाई रहती है। यदि किसी ने आम खाया ही न हो, तो वह कैसे बतायेगा कि आम कितना स्वादिष्ट है। यदि मुक्ति से कोई लौटकर ही न आता तो किसने बताया कि मुक्ति पाना सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है। सत्य यही है कि सभी को मुक्ति से लौटना ही होता है, सबका मुक्ति काल भी अलग-अलग होता है। अब मुक्ति दाता स्वयं सभी को मुक्तिधाम ले जाने के लिए आया है।

Contact e-mail - bskurya8@yahoo.com

मानव के मानस पटल पर एक अमिट

छाप छोड़ता - ग्लोबल हॉस्पिटल

प्रथम सुख निरोगी काया के संकल्प को अभिभावक के रूप में साकार रूप देने की ओर पहला कदम मुम्बई के प्रसिद्ध कैन्सर सर्जन डॉ. अशोक मेहता जी ने बढ़ाया। 'राजयोग से निरोगी काया' की ओर बढ़ने की संकल्पना को स्वास्थ्य सेवाओं में शामिल करने के विचार से प्रेरित होकर ब्रह्माकुमारी

'कम्युनिटी सर्विस प्रोग्राम' के अन्तर्गत करीब 61 गाँवों को गोद लिया गया है। जहाँ के स्कूलों में बच्चों की पढ़ाई के साथ उनके स्वास्थ्य की नियमित जाँच एवं चिकित्सा के लिए 2 एम्बुलेन्स चिकित्सकों की टीम के साथ रोज उन तक पहुँचती है। इसकी विभिन्न चिकित्सा सुविधाएँ

शुभकामनाएँ। हर गुजरते हुए वर्ष के साथ जे.वाटुमल ग्लोबल हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर, माउंट आबू ने अनेक चुनौतीपूर्ण लक्ष्यों को हासिल किया है। हॉस्पिटल के व्यवस्थापक एवं समस्त ग्लोबल अस्पताल परिवार को समाज के प्रति उनकी सेवाओं और सहयोग के लिए मैं दिल से मुबारक देना चाहती हूँ। मुझे विश्वास है कि आप सभी इसी तरह सुप्रोम सर्जन, विश्वकल्याणकारी और सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक, और आध्यात्मिक स्वास्थ्य की प्रेरणा देने वाले परमपिता परमात्मा का नाम बाला करते रहेंगे। आप सदा ऐसे ही रहानी मुस्कान और सकारात्मक व्यवहार से मरीजों और आनेवाले हरेक व्यक्ति की सेवा में तत्पर रहेंगे। आप कोई साधारण कार्य नहीं कर रहे हैं, अपने सत्कर्मों का खाता जमा कर, सदा के लिए पुण्य की कमाई जमा कर रहे हैं। दादी जानकी (मुख्य प्रशासिका-ब्रह्माकुमारीज) ग्लोबल हॉस्पिटल और रिसर्च सेंटर के मजबूत आधारस्तंभ और समर्पित रूप से सेवाएँ प्रदान करने वाले स्वास्थ्य प्रदाताओं का मैं दिल से धन्यवाद करना चाहता हूँ, जिन्होंने आसपास के ज़रूरतमंद मरीजों विशेषतः पोलीयो, कैंट्रिक और कमजोरी से परेशान लोगों को अपनी अथक सेवाओं से लाभान्वित किया। जिसके कारण आज हॉस्पिटल का नाम बहुत ही सम्मान और प्रेम से लिया जाता है। बी.के. निर्वैर मैनेजिंग ट्रस्टी ग्लोबल हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर 1 जे. वाटुमल ग्लोबल हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर, देलवाड़ा रोड, माउण्ट आबू-307510 फोन: 2974-238347/8/9, फैक्स: 02974-238570, ई-मेल: ghrcabu@gmail.com, www.ghrc-abu.com



माउण्ट आबू स्थित ग्लोबल हॉस्पिटल का विहंगम दृश्य

विश्वविद्यालय के महासचिव व ग्लोबल अस्पताल के मैनेजिंग ट्रस्टी ब्र.कु.निर्वैर और चन्डीगढ़ के डॉ. प्रताप मिड्डा के साथ मुम्बई के श्री खुबा और श्री गुलाब जे. वाटुमल ने

आँध्रपेडिक्स, जनरल एवं लेप्रोस्कोपिक ऑपरेशन सुविधानाक, कान, गला रोग सर्जरी दन्त रोगप्लास्टिक एवं रो-कन्स्ट्रक्शन सर्जरी, नेत्र रोग। इसी क्रम में निम्न विभाग भी कार्यरत हैं जैसे स्त्री रोग प्रसूति, शिशु रोग (डॉ. सौरभ सिंग-स्त्री रोग विशेषज्ञ जनरल मेडिसिन) (डॉ. सचिन सुखसोहले, फिजिशियन एवं इन्टेसिविस्ट), डायलिसिस (24 घंटे) हृदय रोग (कार्डियोलॉजी), इ.सी.जी. 2डी ईको कार्डियोग्राम व टी.एम.टी से चिकित्सा व जांच सुविधा। मस्तिष्क/मनोचिकित्सा एवं



गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी जी को ग्लोबल हॉस्पिटल का अवलोकन करवाते हुए डॉ. प्रताप मिड्डा।

व्यसनमुक्त डायबिटिक क्लिनिक - डायबिटिक मैनेजमेंट

कदम से कदम मिलाया तथा अपने पिता की स्मृति में 'जे.वाटुमल ग्लोबल हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर' के नाम से इसकी स्थापना सन 1990 में की।

शूगर कन्ट्रोल (डॉ. श्रीमंत कुमार साहु, एम बी बी एस, एम डी) अन्तरंग विभाग (आई पीडी) सुपर स्पेशियलिटी सुविधाएँ 24 घंटे उपलब्ध सेवाएँ आपातकालीन दुर्घटना सेवा इन्टेन्सिव केयर सर्विसेज ट्रस्ट द्वारा चलाये जा रहे अस्पताल।



मैनेजेंट थैरेपी द्वारा मरीज को चिकित्सा लाभ लेते हुए

ग्लोबल अस्पताल ने पिछले 22 वर्षों के अपने सफलतम सफ़र में राजस्थान के सिरोंही जिला एवं आस-पास के क्षेत्रों में अपने आधुनिक उपकरणों और कुशल चिकित्सकों के सहयोग से लाखों लोगों को स्वास्थ्य प्रदान किया है। माउण्ट आबू और आबू रोड के आस-पास के और दूर-दराज के गाँवों में यहाँ के चिकित्सक दलों ने जाकर गरीब-आदिवासी जनजातियों में सुस्वास्थ्य के प्रति सजगता के साथ ही वहाँ के स्कूलों को गोद लेकर बच्चों के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास के लिए अथक परिश्रम किये हैं। इसकी एक अन्य शाखा के रूप में विशाल ट्रॉमा सेंटर आबू रोड में सन 2007 से कार्यरत है।

1. जी.व्ही. मोदी रुशल हेल्थ केयर सेंटर, तलहटी, आबू-रोड।
2. ग्लोबल हॉस्पिटल इन्स्टीट्यूट ऑफ ऑपथेल-मोलॉजी, तलहटी, आबूरोड।
3. ब्रिगेडियर वीरा क्लिनिक एण्ड ज्योति विन्दु डायग्नोस्टिक सेंटर, वड़ोदरा।
3. वी.एस.सी.एस.एम.जी.ग्लोबल हॉस्पिटल, अंधेरी-मुम्बई।

सूचना
ग्लोबल हॉस्पिटल नर्सिंग स्कूल के लिए एक महिला वार्डन की आवश्यकता है। योग्यता - एम.एस.सी. होम साइंस / वी.एस.सी. होम साइंस। अनुभव - पाँच वर्ष का शिक्षण अथवा एक वर्ष का वार्डन के रूप में अनुभव। पता - सरोज लाल जी मल्होत्रा नर्सिंग कॉलेज, शिवमणि होम के पास, तलहटी आबू रोड। संपर्क - 09274-228970, 08432403244, ई-मेल: ghsn.abu@gmail.com



अकोट-महा.। टीचर ट्रेनिंग के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. जयश्री, प्राचार्य डॉ. शोभना सावजी, डॉ. कोटवाणी तथा अन्य।



अकोला-महा.। 'ब्रह्माकुमारीज मार्ग' का शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. संतोष। साथ हैं विधायक गोवर्धन शर्मा, नगरसेविका वैशाली शेलके, ब्र.कु. वैशाली, ब्र.कु. रुपाली तथा अन्य गणमान्य जन।



अमितेध नगर-इन्दौर.। धरा पर शांति महोत्सव कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए इन्दौर मैनेजमेंट कॉलेज के डायरेक्टर डॉ. निशीथ दूबे, ब्र.कु. प्रभा मिश्रा, ब्र.कु. अनिता, ब्र.कु. युगरल एवं पार्षद दिलीप सुरागे।



सिकंदराबाद-संजीव रेड्डी नगर। मम्मा के स्मृति दिवस पर आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. सरोजिनी, ब्र.कु. मंजु, अंजनेयुधु, विनूगोण्डा टी.डी.पी., विधायक, आ.प्र., मगनी गौपीनाथ, जुबली होल्स टी.डी.पी., विधायक तेलंगाना, विवेकानंद गौड़, कथबुल्लपुर टी.डी.पी., विधायक तेलंगाना, ब्र.कु. सत्यनारायण।



वड़ोदा-गुज.। ग्लोबल हॉस्पिटल में 'फ्री मेंडिकल कैम्प' के उद्घाटन के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. भगवान, ब्र.कु. राज, डॉ. विशाल गुप्ता व डॉ. पी.टी. शाहू।



व्यावरा-राजगढ़ (म.प्र.)। 'धरा पर शांति महोत्सव' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. प्रभा मिश्रा, साध्वी सत्यप्रिया बहन, ब्र.कु. मधु व ब्र.कु. लक्ष्मी।

गामदेवी सेंटर ने मनाया स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव



गामदेवी-मुम्बई। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. नेहा, मैनेजिंग ट्रस्टी रमेश शाह, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. दिव्यप्रभा, ब्र.कु.मोरा, ब्र.कु.नलिनी दीदी, वीडियोकार्ण के चेरयमैन वाई.पी. त्रिवेदी, कमिशन फॉर वुमेन के चेरयमैन शशि साह तथा अन्य गणमान्य जन।

गामदेवी-मुम्बई। गामदेवी सेंटर की गोल्डेन जुबली सेलिब्रेशन के अवसर पर दादी रतनमोहिनी ने कहा कि आज से 50 वर्ष पूर्व तत्कालीन मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि द्वारा गामदेवी सेवाकेंद्र का शुभारंभ हुआ, जिसके माध्यम से आज ईश्वरीय संदेश जन-जन तक पहुंच रहा है और इसका लाभ पाकर जनमानस अपने जीवन को सुंदर बनाने के पथ पर

अग्रसर हुए हैं और हो रहे हैं। गोल्डेन जुबली के अवसर पर उन्होंने कहा कि भारत पुनः सोने की चिड़िया बनेगा जहां हर मानव टेशन व मानसिक व्याधियों से मुक्त होगा और हर मानव के मन में सुख शांति और चैन की बंसी बजेगी। इस समयचक्र के अंतर्गत परमात्मा इस धरा पर आकर ऐसी दुनिया बना रहा है, ये संदेश देते हुए सबका

आह्वान किया कि आप भी सभी परमात्मा से अपना सुख शांति और प्रेम का वर्सा लेकर अपने को धन्य बनाइए। रमेश शाह, मैनेजिंग ट्रस्टी, ब्रह्माकुमारीज ने कहा कि पचास साल पूर्व रखी नींव से ईश्वरीय संदेश आज पूरे नगरवासियों को पहुंच रही है। ब्र.कु. संतोष ने जनसभा को सम्बोधित किया। विशेष रूप से कलाकारों ने भारत के कालचक्र

में स्वर्णिम भारत की झलकियाँ दिखाते हुए बताया कि किस प्रकार हमारा भारत स्वर्णिम दुनिया कहलाता था और धीरे-धीरे इसकी स्थिति क्या से क्या हो गई। इस उत्थान और पतन की कहानी को कला के माध्यम से और ज्ञानवर्धक रूप से प्रस्तुत करके कलाकारों ने लोगों के दिलों को छू लिया। वीडियोकार्ण के अध्यक्ष वाय.वी. त्रिवेदी भी इस अवसर

पर मौजूद थे। एम.पी. और शहर के गणमान्य लोगों ने भी उपस्थित होकर इस कार्यक्रम को शोभा बढ़ाई। बहुत ही उमंग-उत्साह के साथ यह कार्यक्रम समुखानंद ऑडिटोरियम, सायन में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में ये ऑडिटोरियम लोगों से खचाखच भरा हुआ था तथा सभी ने इस कार्यक्रम का भरपूर लाभ उठाया।

खुशी का आधार मन की सच्चाई-जस्टिस ईश्वरैय्या

ओ.आर.सी। आज दुनिया में सभी सच्ची खुशी चाहते हैं, लेकिन हम देखते हैं कि इन खुशियों को मानव बाह्य जगत की भौतिक वस्तुओं एवं व्यक्तियों में ही ढूँढते हैं, वास्तव में सच्ची खुशी हमारे स्वयं के भीतर है। खुशी मन की एक अवस्था है। जितना मन के भीतर सच्चाई एवं सफाई होती है, उतना जीवन स्वतः ही खुशियों से भरपूर होता है। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय नेशनल ज्यूरिस्ट कॉन्फ्रेंस में 'आर्ट ऑफ हैपी लिविंग' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में पूर्व चीफ जस्टिस



ओ.आर.सी। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए पूर्व चीफ जस्टिस वी. ईश्वरैय्या, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. रश्मि, एडवोकेट मुकेश आहूजा, ब्र.कु. अमिता, एडवोकेट ब्र.कु. लता तथा अन्य।

हैं उनमें बहुत से मामले झूठे होते हैं। जब हमारा मन शान्त होगा तभी हम स्थिति को समझ सकेंगे एवं सही न्याय दिला सकते हैं। राजयोग हमारे मन को सकारात्मक एवं शक्तिशाली बनाता है। उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर कहा कि जबसे मैंने अपने जीवन में राजयोग का अभ्यास किया, हमेशा बिना किसी दबाव व प्रलोभन के निष्पक्ष न्याय दिया। उन्होंने कहा कि मुझे खुशी है कि

आज राजनीति के क्षेत्र में भी अच्छा परिवर्तन आ रहा है, हमारे प्रधानमंत्री जी की भी यही शुभ इच्छा है कि भारत की छवि सारे विश्व में एक श्रेष्ठ एवं ईमानदार राष्ट्र के रूप में सामने आये, जिसके लिए उन्होंने अपनी योजनाओं को कार्यरूप देना शुरू भी कर दिया है। ब्र.कु. आशा, निदेशिका, ओ.आर.सी. ने कहा कि आज हम सभी इस बाह्य जगत में रहते हैं जिसके कारण हमारा

ज्यादातर समय भौतिकता के चिन्तन में ही जाता है लेकिन आज आप यहाँ इसलिए आये हैं कि स्वयं के भीतर जाकर हम महसूस करें कि हम वास्तव में क्या हैं एवं कौन-सी वो क्षमतायें हैं जिनके द्वारा हम स्वयं के साथ-साथ समाज का भी हित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि दादी जानकी, चीफ ऑफ ब्रह्माकुमारीज कहती हैं कि हमें दर्पण बनना है, बिन्डो नहीं, क्योंकि दर्पण में

हम स्वयं को देख सकते हैं जबकि बिन्डो से दूसरों को ही देखते रहते हैं। बाहर की दुनिया में आज सिर्फ प्रतिस्पर्धा है, निन्दा है, जोकि हमें खुशी से दूर ले जाती है। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय के द्वारा की जा रही सेवाओं की भी जानकारी दी। ब्र.कु. पुष्पा, दिल्ली ने कहा कि देवताओं के चित्रों से आज तक भी हमें सुख, शान्ति, आनंद एवं खुशी का अनुभव होता है जिसका कारण देवताओं के श्रेष्ठ चरित्र एवं उनके जीवन की सत्यता है, लेकिन आज हम अपने सत्य-स्वरूप को भूलकर भौतिकता को ही अपना स्वरूप समझने लगे हैं। उन्होंने सभी को राजयोग का गहन अनुभव भी कराया। रश्मि बहन, हेड ऑफ द डिपार्टमेंट, लॉ कॉलेज, मुम्बई ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का शुरुआत में मुकेश आहूजा, एडवोकेट ने सभी मंचासीन अतिथियों का स्वागत किया। न्यायविद से जुड़े सैकड़ों गणमान्य जनों ने इस से इस सुंदर कार्यक्रम में शिरकत की। कार्यक्रम का संचालन एडवोकेट लता, माउण्ट आबू ने किया।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट वाॅक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510

सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkiv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/12-14, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2013-14, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 4th July 2014
संपादक: ब्र.कु. गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु. करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज मीडिया प्रभाग (आर.ई. आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.वी. प्रिंट सॉल्यूशंस जयपुर से मुद्रित।

असाधारण की सीढ़ी...

दुनिया में दो ही तरह के लोग हैं, साधारण और असाधारण। साधारण से तात्पर्य है, जो अभी सिर्फ दीया है, ज्योति बन सकते हैं। साधारण, असाधारण का अवसर है, मौका है, बीज है। और असाधारण वह है, जो ज्योति बन गया और गया वहां - उस घर को तरफ जहां शांति है, जहां आनंद है, जहां खोज का अंत है और उपलब्धि है।

इसलिए विशिष्ट जब कहा जा रहा है तो इसका मतलब यह नहीं है कि किसी से विशिष्ट। विशिष्ट जब कहा जा रहा है तो इसका मतलब है साधारण नहीं, असाधारण। हम सब साधारण हैं और हम सब असाधारण हो सकते हैं। और जब तक हम साधारण हैं, तब तक हम साधारण के बीच में भी साधारण-असाधारण के जो भेद खड़े करते हैं, वे एकदम नासमझी के हैं।

साधारण बस साधारण ही है, वह चपरासी है कि राष्ट्रपति, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। ये साधारण के ही दो रूप हैं - चपरासी पहली सीढ़ी पर, राष्ट्रपति आखिरी सीढ़ी पर। चपरासी भी चढ़ता जाए



- व. कु. गंगाधर

तो राष्ट्रपति हो जाए, और राष्ट्रपति उतरता आए तो चपरासी हो जाए। चपरासी चढ़ जाते हैं और राष्ट्रपति उतर आते हैं, दोनों काम चलते हैं। यह एक ही सीढ़ी पर सारा खेल है - साधारण की सीढ़ी पर।

साधारण की सीढ़ी पर सभी साधारण हैं, चाहे वे किसी भी पायदान पर खड़े हों या वे किसी भी सीढ़ी पर खड़े हों - नंबर एक की, कि नंबर हजार की, कि नंबर शून्य की - इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। एक सीढ़ी साधारण की है। और इस साधारण की सीढ़ी से जो छलांग लगा जाते हैं, वे असाधारण में पहुंच जाते हैं।

असाधारण की कोई सीढ़ी नहीं है। इसलिए असाधारण दो व्यक्तियों में नीचे-ऊपर कोई नहीं होता। फिर कई लोग पूछते हैं कि बुद्ध ऊंचे कि सहीवीर? कि कृष्ण ऊंचे कि क्राइस्ट? तो वे अपनी साधारण की सीढ़ी के गणित से असाधारण लोगों को सोचने चल पड़े हैं। और ऐसे पागल भी हैं कि किताबें भी लिखते हैं कि कौन किससे ऊंचा। और उन्हें पता नहीं कि ऊंचे और नीचे का जो खयाल है, वह साधारण दुनिया का खयाल है। असाधारण ऊंचा और नीचा नहीं होता। असल में जो ऊंचे-नीचे की दुनिया के बाहर चला जाता है, वही असाधारण है। तो वहां कैसे तौल कि कबीर कहां कि नानक कहां! और ऐसी किताबें हैं और ऐसे नक्शे बनाए हैं लोगों ने कि कौन किस सीढ़ी पर खड़ा है वहां भी! कि कौन आगे है, कौन पीछे है, कौन किस खंड में पहुंच गया है। वह साधारण लोगों की दुनिया है, और साधारण लोगों के खयाल हैं। वे वहां भी वही सोच रहे हैं।

वहां कोई ऊंचा नहीं है, कोई नीचा नहीं है। असल में ऊंचा और नीचा जहां तक है, वहां तक दीया है। ज्योति बड़ी और छोटी नहीं होती। ज्योति या तो ज्योति होती है या नहीं होती। ज्योति बड़ी या छोटी का क्या मतलब है?

और निराकार में खो जाने की क्षमता छोटी ज्योति की उतनी ही है, जितनी बड़ी ज्योति की। और निराकार में खो जाना ही असाधारण हो जाना है। तो छोटी ज्योति कौन? बड़ी ज्योति कौन? छोटी ज्योति धीरे-धीरे खोती है? बड़ी ज्योति जल्दी खो जाती है? यह वैसी ही भूल है... इसे थोड़ा समझ लेना उचित होगा।

हज़ारों साल तक ऐसा समझा जाता था कि अगर हम एक मकान की छत पर खड़े हो जाएं और एक बड़ा पत्थर गिराएं और एक छोटा पत्थर - एक साथ - तो बड़ा पत्थर ज़मीन पर पहले पहुंचेगा, छोटा पत्थर पीछे। हज़ारों साल तक यह खयाल था, किसी ने गिरा कर देखा नहीं था। क्योंकि यह बात इतनी साफ-सीधी मालूम पड़ती थी और उचित, और तर्कयुक्त, कि कोई यह कहता भी अगर कि चलो ज़रा छत पर गिरा कर देखें, तो लोग कहते, पागल हो, इसमें भी कोई सोचने की बात है? बड़ा पत्थर पहले गिराएगा। बड़ा मास है, ज़्यादा मास है, छोटा पत्थर छोटा सा है, पीछे गिरेगा। बड़ा पत्थर जल्दी आएगा, छोटा पत्थर धीरे आएगा।

लेकिन उन्हें पता नहीं था कि बड़े पत्थर और छोटे पत्थर का सवाल नहीं है गिरने में, सवाल है गैविटेशन का, सवाल है ज़मीन की कशिश का। और वह कशिश दोनों पर बराबर कर रही है, छोटे और बड़े का उस कशिश के लिए भेद नहीं है।

मातेश्वरी ने निज ज्ञान को प्रैक्टिकल जीवन में लाया

प्रश्न: दादी जी, मम्मा के दिन चल रहे हैं, मम्मा ने ऐसा क्या पुरुषार्थ किया जो नम्बरवन चली गई? आप मम्मा की कुछ विशेषतायें सुनायें।

उत्तर: मम्मा ने ज्ञान को न सिर्फ कानों से सुना, पर उस निज ज्ञान को एकदम प्रैक्टिकल जीवन में लाया। चाहे गुणों के आधार से, चाहे ज्ञान के आधार से, चाहे योग के आधार से, चाहे सेवा के आधार से। मम्मा ने सब सबजेक्ट में नम्बरवन लिया। मम्मा बहुत प्यार से बैठकर ज्ञान सुनाती थीं। मम्मा ज्ञान की एक-एक बात की गहराई में जाती थीं। जैसे बाबा ने कहा बच्चों की ऐसी विशाल बुद्धि चाहिए। तो मम्मा की बुद्धि बहुत विशाल थी। डल बुद्धि, जामड़ी बुद्धि नहीं थी।

मैं भाग्यवान हूँ, बाबा-मम्मा को ज्ञान के पहले भी देखा था। बाबा को देखा था अपने जौहरी को पर्सिनलिटो से, वन्दरफुल पर्सिनलिटो थी। मम्मा को देखा था कुमारियों में से ऐसी कुमारी फैशनबल, यज्ञ में आते ही उसमें अति परिवर्तन देखा। यह भी मम्मा की कमाल थी। एक धक से फैशन को छोड़ बहुत सिम्पल बन गई। शान्तामणि दादी मम्मा के मौसी की लडकी थीं, परन्तु एक-दो का आपस में कोई लौकिक सम्बन्ध है, यह किसी को भी दिखाई नहीं पड़ा। मम्मा बहुत डिटेच रहती थीं। न्यारी-न्यारी। यह मम्मा की बड़ी खूबी थी। मम्मा कभी लौकिक सम्बन्ध के हिसाब से नहीं रही। मम्मा बहुत रॉयल

थी। मम्मा ने माँ का पार्ट बजाया, लेकिन मम्मा के चलने-फिरने में भी कभी रोब नहीं देखा। मम्मा अमृतवेल चक्कर लगाती थी लेकिन कभी किसी से रोब से बात नहीं की। हम अजब खाते थे, पूणे में मम्मा हमारे साथ थी, सबके साथ मिलते-जुलते बहुत गम्भीर।

कभी साक्षी होकरके देखो, हम लोगों का भाग्य है, जानना, देखना फिर इतने साल साथ में पार्ट बजाना, यह कम बात ली है क्या! यह भी कितना भाग्य है!

प्रश्न: दादी हम लोगों की इतनी शुभ-भावनायें हैं, क्या यह शुभ-भावनायें पेन (दर्द) को समाप्त नहीं कर सकती? **उत्तर:** हम सदा कहती बाबा आपका काम है कहना, हमारा काम है करना। बहुत करके गुलजार दादी यही कहती हैं - बाबा ने कहा, हमने किया। अभी कहते यह हिसाब-किताब है! मैं दादी गुलजार से कभी-कभी पूछती हूँ, क्या मेरा पूर्व जन्म का हिसाब-किताब चुकतू नहीं हुआ है! शायद, शायद नहीं कहती हूँ, हिसाब-किताब चुकतू नहीं हुआ है, न सिर्फ हमारा पर अनेक आत्माओं का। हो जायेगा। कर्मातीत तो बनना है ना। सतयुग तो आने वाला है ना, गैरन्टी है हम सतयुग में आने वाले हैं, परन्तु मम्मा को स्थापना करने वाले हैं।

एक बारी का दृश्य मुझे कभी भूलता नहीं है। रोचा भोग लगा रही थी, तभी भोग की सिस्टम शुरू हुई थी, बाबा-मम्मा

एक-दो को दृष्टि दे रहे थे। तो मम्मा से किसी ने पूछा मम्मा क्या आपको नशा चढ़ा हुआ था कि मैं लक्ष्मी, नारायण



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

को हूँ! तो मम्मा ने बड़े प्यार से, सीरियसली आंख दिखाई। यह नहीं कह सकते मैं लक्ष्मी, नारायण की बन्गी। मैं तो इस समय बाबा की बेटी हूँ। बहुत अत्यन्त स्वरूप था। जरा भी व्यक्त भान नहीं था। तो इस जन्म में मम्मा ने अपना पुरुषार्थ किया है, बाबा ने अपना किया है। मम्मा उस समय देह के भान से बिल्कुल परे थीं।

पुरुषार्थ में बहुत-बहुत सच्चाई चाहिए, जरा भी मिक्सचर नहीं। हम भी कहेंगे कुछ जरा भी मिक्सचर न हो। जैसे बाबा-मम्मा के पुरुषार्थ में मिक्सचर नहीं है, ऐसे हमारे पुरुषार्थ में भी न हो। मम्मा को परचितन, परदर्शन का जैसे पता ही नहीं था। कभी मम्मा को परचितन करते हुए नहीं देखा। जो बाबा ने कहा, मम्मा ने वही किया। कभी भी उसमें अपना संकल्प भी एड नहीं किया। मम्मा सदा एकान्तवासी थीं। बहुत कम बोलती थीं। मम्मा को एकान्त बहुत पसन्द था। दो बजे उठकर छत पर चली जाती थीं, वहां एकान्त में तपस्या करती थीं। मम्मा सदा अपने स्वमान में रही और सबका स्वमान बढ़ाने में नम्बरवन रही।



दादी हृदयमोहिनी अति-मुख्य प्रशासिका

सतयुग की कारोबार के बारे में दादी से वार्तालाप

प्रश्न: क्या सतयुग में लक्ष्मी नारायण आपस में कुछ डिस्कस करेंगे?

उत्तर: हाँ, मैं, कम्प्यूटर की बातचीत करेगे, हसंगे खेलेंगे क्यों नहीं! बाकी आप सब ही तो बन हैं ना! वो तो अभी भी याद करो तो वह खुशी आ जाती है।

प्रश्न: आज तक हमें ये लगता था कि हाँ कुछ फर्क होगा ज़रूर, फिर भी नम्बरवन बाप कहेंगे और फिर नम्बर 2 शब्द शोभाना नहीं है। आज बुद्धि में एक नई बात आ रही है जो बाबा कहते हैं कि आप अपना लक्ष्य रखो लक्ष्मी-नारायण बनने का... तो लगता है कि सिर्फ नारायण बनने का लक्ष्य रखना चाहिए।

उत्तर: हर एक का मर्तबा नम्बरवन अपने अनुसार है। राजधानी की कारोबार में भले ही लक्ष्मी नहीं होगी लेकिन उनके साथी जो कारोबार में उनके मददगार होंगे, वे तो साथ होंगे ना, अकेला थोड़े ही होगा। लक्ष्मी में भले लक्ष्मी-नारायण दोनों ही कहा जाता है फिर भी नम्बरवन टूके हिसाब से तो पहले नारायण को रखेंगे ना।

प्रश्न: जैसे कहते हैं कि राज्य रानी का और हुकुम सरकार का तो रानी का भी

तो कुछ राज्य होगा ना?

उत्तर: वो तो समानता होती है वहाँ, ऐसा नहीं समझो कोई भी काम है नारायण, लक्ष्मी के ऊपर रखता है तो लक्ष्मी भी ऐसा ही करेगी जैसे नारायण। दोनों को बुद्धि की ऑथोरिटी तो है ना, कम नहीं होते हैं, दोनों ही में अपनी-अपनी शक्ति, अपना-अपना संस्कार, अपनी-अपनी ड्यूटी...अपनी-अपनी है।

प्रश्न: देवताओं का जो कम्प्यूटेशन है जैसे आपने बताया कि खुशी को लेन-देन एक नैचुरल रीति से चलती परन्तु सूक्ष्मवतन में जब जाते हैं वहाँ पर कम्प्यूटेशन किस तरह से होता है? वतन में साक्षात्कार में वहाँ कम्प्यूटेशन कैसे होता है? आप बताते हैं ना आज बापदादा ने बांहों की माला पहनाई फिर आप बहुत डिटेल में हमें बताते हैं कि बाबा ने यह कहा, बाबा ने ऐसे बताया आदि-आदि...तो वो आप कैसे समझते हैं कि बाबा ने कैसे आपको बताया? और बाबा को जब आपको सन्देश देना होता है जो आप फिर आके हमें बताते हैं तो वो बाबा क्या आपकी बुद्धि को टच करता और वो आप समझ जाते हैं? क्योंकि हमने यह सुना है कि वतन में साइलेंस वा मूवी में ही सबकुछ चलता...या आपको लगता है जैसे बाबा आपको आवाज से बता रहा

है।

उत्तर: हम जब सूक्ष्मवतन में ध्यान-दीदार में जाते हैं तो वो तो जैसे यहाँ दिखाई देते हैं ना, वैसे ही बाबा दिखाई देता है, बाबा आया, दूर से देखा तो उठा, मिला। जैसे यहाँ दिखाई देता है वैसा वहाँ भी एकट में दिखाई देता है। और जब कोई सन्देश लाना होता है तो बोलते हैं, बाबा बात करता है। जैसे सुनके कोई रूबरू देवे ना, ऐसे अनुभव होता है। लेकिन हम भी उस समय मूवी होते हैं ना तो हमको नैचुरल लगता है। समझ में ऐसे आता है भले बोलें लक्ष्मी भी, लेकिन समझ में ऐसे ही आता है जैसे टांक कोई करता है यानि मुश्किल नहीं, यह क्या कहा बाबा ने! जैसे नैचुरल हम सुन रहे हैं, बाबा बोल रहा है और मैं भी तो परिवर्तन हो जाती हूँ ना, फरिश्ता बन जाती हूँ, तो नैचुरल लाइफ हो जाती है। फरिश्ते रूप में मैं भी तो आकारी हो जाती हूँ ना।

तो आकारी को आकारी की बात समझना ईजी होता है। आप सभी को अनुभव करना है तो अमृतवेल आप बैठके एक बारी चक्कर लगाके आओ। जितनी-जितनी पावरफुल अशरीरीपन की अवस्था होगी उतना ही कैच कर सकेंगे ना। यथाशक्ति होगा ना।

राजयोग एक विज्ञान भी है और यह सहज राजयोग है। इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना के निमित्त पिताश्री हमेशा कहा करते कि इसे केवल राजयोग नहीं कहे, सहज राजयोग कहे। राजयोग कई लोग सुनते ही समझते हैं कि कोई कठिन प्रकार का अभ्यास या पुरुषार्थ है। सबसे पहले जब किसी को ये बात मन में बैठ जाती है कि ये कार्य तो सहज है, मैं भी कर सकता हूँ आमतौर पर मुहावरे में जैसे कहा जाता है कि ये तो बायें हाथ का खेल है, इसे तो बच्चे भी कर सकते हैं। जब हमारा किसी कार्य के प्रति ऐसा दृष्टिकोण बनता है तो समझिए कि वो कार्य हुआ ही पड़ा है। अगर कोई व्यक्ति किसी कार्य के लिए सोच लेता है कि ये कठिन है, ये तो मेरे

न करने को शक्ति। आप यदि चाहते हैं कि मुझे अभी इस तरह ध्यान नहीं लगाना है, ये नहीं सोचना है तो ये भी आपमें शक्ति है। रात को जब आप सोते हैं तो आप उस समय इस शक्ति का प्रयोग करते हैं कि मैंने दिन भर काम कर लिया अब सोचना विचार करना बंद, अब मैं अंधेरा करके सोता हूँ तो आप थॉट्स को ब्रेक लगा लेते हैं ये आपको रोकने की शक्ति है कि जो आपने सारा दिन विचार किया उसे एक सेकेण्ड में ब्रेक लगा देते हैं। जैसे कार में दो तरह के फ्रैकलटी होते हैं ब्रेक भी है और साथ-साथ स्टार्टर भी है। स्टार्ट

चलाना ये हर व्यक्ति को जन्म से मालूम है। योग में इसी शक्ति का प्रयोग होता है और ये योग जो आप सोच रहे हैं वो इसलिए सहज है क्योंकि जैविक लोग कहते हैं कि योग चित्त की वृत्तियों के निरोध का नाम है। कुछ लोग अपने थॉट को रोकने की कोशिश करते हैं, यदि वे थॉट को रोक भी लेते हैं प्राणायाम से या अन्य क्रियाओं से तो भी उसकी उस वक़्त ये थॉट रहती है कि मेरी कोई थॉट नहीं है तो ये भी एक थॉट है। जो थॉट को बंद करेंगे वो भी थॉट से ही बंद करेंगे। सिर्फ एक प्रकार की थॉट को दूसरे प्रकार की थॉट से रिप्लेस करेंगे। थॉट एक प्रकार का असेट है जिसका हमें सफल प्रयोग करना चाहिए। बाबा ने हमें बताया है कि थॉट को रोकना नहीं है, मनोवैज्ञानिक



बैंगलोर। ब.कु. करुणा, माउण्ट आबू को उनके उत्कृष्ट सामाजिक उद्योग में बहुमूल्य योगदान के लिए रविन्द्र कलाक्षेत्र द्वारा आर्यभट्ट इंटरनैशनल अवार्ड से सम्मानित करते हुए महेश जोषी, डायरेक्टर जनरल दूरदर्शन, दिल्ली, शिवराज पाटील, सुप्रीम कोर्ट जस्टिस, एच.एन.एल राव, साईटिस्ट, विधानसभा स्पीकर, कर्नाटक, मि. प्रभु, एम.डी., स्वर्णा टो. वी. चैनल।

सहज राजयोग

- ब.कु. जगदीश हसीजा

मनोवैज्ञानिक सिद्धांत के अनुसार जैसा आप सोचेंगे वैसा आप करेंगे। यदि कोई व्यक्ति कहे

कि मेरा मन अशांत है और जब उससे पूछेंगे कि क्या कारण है तो कहेगा कारण तो मुझे भी मालूम नहीं लेकिन अशांत हूँ। जब आप उससे और प्रश्न पूछेंगे तो आपको पता चलेगा कि वो कुछ ऐसी बात सोच रहा है जो है ही अशांति देने वाली।



बस का नहीं है ये तो टेढ़ी खीर है तो फिर उसकी शक्तियां संगठित होके कार्य नहीं कर सकतीं। किसी भी कार्य को करने के लिए मनुष्य के मन में उमंग और उत्साह चाहिए। जीवन का हमारा ये असूल होना चाहिए कि कोई भी कार्य जब हम करते हैं तो जम के करें डट के करें क्योंकि जब व्यक्ति किसी काम को आधे मन से करता है और उसे पूरी सफलता नहीं मिलती तो उसमें कॉन्फिडेंस की कमी हो जाती है, अपने बारे में इनफीरियॉरिटी कॉम्प्लेक्स हो जाता है, फिर वह जीवन में लंगड़ाकर चलता है जबकि योगी अपने जीवन में कोई भी कार्य करता है तो दत्तचित होकर करता है। उसी तरह किसी भी कार्य को डीटेल को समझकर उसमें पूरा मन लगाकर और कॉन्सेन्ट्रेशन से उस काम को किया जाना चाहिए। सफलता का जो पहला-पहला निशान है वो ये कि उसको विश्वास होना चाहिए कि मैं ये काम कर सकता हूँ, ये कठिन नहीं है, ये एटिट्यूड उसको उस कार्य को करने में बहुत सहायक होता है लेकिन केवल कहने से ही तो सहज नहीं हो सकता। एक व्यक्ति के लिए कोई बात सहज हो, दूसरे के लिए वो कठिन भी हो सकती है। जब इसे सहज राजयोग कहा जाता है तो कारण क्या है कि ये सहज राजयोग है? कैसे समझ लें कि ये सहज है, तो तीन-चार बातों पर आप विचार कीजिए अगर आप उनको अपने मन में धारण कर लेंगे कि हां ये तो वाकई सहज है फिर आपको योग का अभ्यास करने में कठिनाई नहीं होगी। एक बात तो यह है कि आप जानते हैं कि हरेक व्यक्ति के शरीर और मस्तिष्क की दो योग्यताएं हैं, एक किसी कार्य को करने की शक्ति और एक किसी कार्य को

सिद्धांत के अनुसार जैसा आप सोचेंगे वैसा आप करेंगे। यदि कोई व्यक्ति कहे कि मेरा मन अशांत है और जब उससे पूछेंगे कि क्या कारण है तो कहेगा कारण तो मुझे भी मालूम नहीं लेकिन अशांत हूँ। जब आप उससे और प्रश्न पूछेंगे तो आपको पता चलेगा कि वो कुछ ऐसी बात सोच रहा है जो है ही अशांति देने वाली। शांति और अशांति का संबंध या हमारी जीवन की हर अनुभूति का संबंध हमारी सोच से है। अगर किसी व्यक्ति में ये कला हो कि वो किसी के थॉट को पढ़ सके तो उस व्यक्ति को फोर्लिंग का कारण बताया जा सकता है। इस सिद्धांत को सामने रखते हुए यदि हम योग में ये थॉट रखेंगे कि परमात्मा शांति के सागर हैं, प्रेम के सागर हैं, आनंद के सागर हैं, दुःखहर्ता-सुखकर्ता हैं, मेरा भी वास्तविक स्वरूप शांत है, मैं शुद्ध हूँ तो इस प्रकार की सोच से हमारे जीवन में वैसी ही अनुभूति होगी। ये योग इसलिए सहज है क्योंकि इसमें थॉट को बिल्कुल रोकने का प्रयास नहीं किया जाता बल्कि अच्छे थॉट से निगेटिव थॉट को रिप्लेस कर दिया जाता है। अपनी इस योग्यता का प्रयोग करते हुए एक निरोधात्मक और दूसरी संचालनात्मक शक्ति, दोनों का जब हम प्रयोग करते हैं इसका नाम योग है। यह योग्यता हरेक को प्राप्त है और ये नैचुरल है इसलिए सहज है।

की कर सकें और ब्रेक भी लगा सकें। अगर ब्रेक न लगा सकें तो किसी चीज में टक्कर लगेगी उसका क्या नतीजा होगा वो भी आपको मालूम है। जिस मनुष्य की ये योग्यता कम हो जाती है वे रात भर सो नहीं सकते, जिनको रात को नींद नहीं आती उसका एक कारण क्या है कि उनकी रोकने की शक्ति कमजोर है। डॉक्टर को कहते हैं कि कोई ऐसी गोली दीजिए जिससे कि मैं सो सकूँ वरन् जन्म लेते ही व्यक्ति की यह योग्यता होती है छोटा बच्चा भी सो जाता है, सोना किसी को सिखाया नहीं जाता। दूसरी जो मनुष्य की नैचुरल एबीलिटी है वो है सोचने की और योग में इसका बहुत प्रयोग होता है। योग में हम क्या करते हैं कि उस समय अपने शरीर के बारे में अपने संबंधियों के बारे में संसार के बारे में परिवार, व्यापार आदि के बारे में जो थॉट्स होते हैं उनको रोक देते हैं और मैं आत्मा हूँ, परमपिता परमात्मा की सतान हूँ, परमधाम का वासी हूँ, अजर-अमर अविनाशी हूँ ये थॉट चलते हैं। एक प्रकार के थॉट को रोक के दूसरे प्रकार के थॉट को

सिद्धांत के अनुसार जैसा आप सोचेंगे वैसा आप करेंगे। यदि कोई व्यक्ति कहे कि मेरा मन अशांत है और जब उससे पूछेंगे कि क्या कारण है तो कहेगा कारण तो मुझे भी मालूम नहीं लेकिन अशांत हूँ। जब आप उससे और प्रश्न पूछेंगे तो आपको पता चलेगा कि वो कुछ ऐसी बात सोच रहा है जो है ही अशांति देने वाली। शांति और अशांति का संबंध या हमारी जीवन की हर अनुभूति का संबंध हमारी सोच से है। अगर किसी व्यक्ति में ये कला हो कि वो किसी के थॉट को पढ़ सके तो उस व्यक्ति को फोर्लिंग का कारण बताया जा सकता है। इस सिद्धांत को सामने रखते हुए यदि हम योग में ये थॉट रखेंगे कि परमात्मा शांति के सागर हैं, प्रेम के सागर हैं, आनंद के सागर हैं, दुःखहर्ता-सुखकर्ता हैं, मेरा भी वास्तविक स्वरूप शांत है, मैं शुद्ध हूँ तो इस प्रकार की सोच से हमारे जीवन में वैसी ही अनुभूति होगी। ये योग इसलिए सहज है क्योंकि इसमें थॉट को बिल्कुल रोकने का प्रयास नहीं किया जाता बल्कि अच्छे थॉट से निगेटिव थॉट को रिप्लेस कर दिया जाता है। अपनी इस योग्यता का प्रयोग करते हुए एक निरोधात्मक और दूसरी संचालनात्मक शक्ति, दोनों का जब हम प्रयोग करते हैं इसका नाम योग है। यह योग्यता हरेक को प्राप्त है और ये नैचुरल है इसलिए सहज है।

कोई भी संसार में आपको ऐसा व्यक्ति नहीं मिलेगा जिसमें प्रेम का गुण न हो। प्रत्येक व्यक्ति का किसी न किसी से प्रेम होता है या तो व्यक्ति से, वस्तुओं से या स्वयं से। इस योग में हम प्रेम का रूप परिवर्तित करते हैं। आत्मा का प्रेम और जगह से हटाकर परमात्मा से लगाते हैं इसलिए ये सहज योग है। प्रेम को परिवर्तित करना भी हरेक का एक स्वाभाविक गुण है। बच्चा छोटा होता है तो उसका माँ-बाप से प्रेम होता है, थोड़ा बड़ा होता है तो मित्रों से प्रेम हो जाता है, थोड़ा और बड़ा होता है तो और तरफ प्यार हो जाता है, शादी हो जाती है, बच्चे होते हैं, बच्चों में प्यार चला जाता है। हरेक में प्रेम है और प्रेम को एक से दूसरे में ले जाना ये भी हरेक का स्वाभाविक गुण है। इस सहज योग



फतेहपुर-अरबपुर(उ.प्र.)। सेवाकेन्द्र पर साध्वी निरजान ज्योति, सांसद, बी.जे.पी. जनपद, फतेहपुर ब.कु. नीरू से स्नेह मिलन करते हुए।



गढ़ी मालियान-अजमेर। हरिन्द्रत शर्मा, अध्यक्ष, विकास समिति बैक अजमेर को ईश्वरीय सीगात भेंट करते हुए ब.कु. छाया।



गया। 'तनाव मुक्त' आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मेवर विभा देवी, ब.कु. शोला तथा अन्य।



इन्दौर-प्रेमनगर(म.प्र.)। विश्व पर्यावरण दिवस पर 'पर्यावरण की सुरक्षा से जीवन की रक्षा' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में वरिष्ठ पर्यावरणविद शिक्षा अधिकारी ब.कु. निलोशेय को ईश्वरीय सीगात भेंट करते हुए ब.कु. राशि।



हैदराबाद। ब्रह्माकुमारी संस्था के एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में शामिल होने के पश्चात् राममोहन जी, ज.ज. एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स से सर्टिफिकेट प्राप्त करते हुए ब.कु. कुलदीप।



वदरगु। दिव्य दर्शन रिट्रीट सेंटर में आध्यात्मिक कार्यक्रम के अंतर्गत दीप प्रज्वलित करते हुए ब.कु. सरोज, ब.कु. अनुसूया, बी.डी. गुणल, जिला समन्वय, नेहरू युवा केंद्र ब.कु. ज्योति।



छतरपुर-भोपाल(म.प्र.)। 'विश्व परिवर्तन का आधार नारी' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन द्वारा उद्घाटन करने के पश्चात् उपस्थित हैं तहसीलदार मिनाक्षी अवस्थी, प्रिन्सिपल स्वरलता पाण्डे, ब.कु. रमा तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।



कडप्पा-आ.प्र.। मातेरवरी जगदम्बा के स्मृति दिवस पर मातेरवरी जी में निहित गुण व विशेषताओं से जुड़ी महत्वपूर्ण बातें बताने के पश्चात् उपस्थित हैं ब.कु. सूर्य व ब.कु. गीता, माउण्ट आबू। साथ हैं अन्य ब.कु. भाई-बहनें।



डिवरगुड़। आध्यात्मिक चर्चा के मध्य उपस्थित वी.मनीबन्धन, डियूटी जी.एम., ई.आई.एल., बी.सी.पी.एल., ब.कु. विनीता, ब.कु. विधान तथा अन्य।



घनन्ती-हि.प्र.। गीता पाठशाला में स्थानीय लोगों को परमात्म अवतरण का संदेश देते हुए ब.कु. कुलदीप।

अखाद्य वस्तुएं और उनका शरीर पर प्रभाव

(चाय, शक्कर, नमक, जानवरों का दूध एवं दूध की बनावट, रिफाइण्ड तैल, मैदा, चावल, दालें, डिब्बाबन्द चीजें, फलों के कृत्रिम रस (रसायनों से बने), मांस, मछली, अण्डा, शराब, तम्बाकू आदि) शरीर में विष द्रव्य बढ़ने का एक मुख्य स्रोत है हमारा आहार। प्रकृति ने शरीर संचालन, मरम्मत के लिये जरूरी सभी चीजें उत्पन्न की हैं। उन चीजों को उसी रूप में स्वीकार की जाए तो वे विषद्रव्य पैदा नहीं होंगे वरन् अगर किसी अन्य कारण से विषद्रव्य पैदा हुआ भी तो उसे निकाल देंगे।

इसके विपरीत दूध एवं दूध की बनावट, नमक, चीनी, घी, रिफाइण्ड तैल, तली हुई वस्तुएं, मिठाईयां, मांस, मछली, अण्डा, चाय, कॉफी, कोल्ड ड्रिंक्स, ब्रेड, बिस्किट, पकौड़े, आईसक्रीम आदि अखाद्य पदार्थ खाने-पीने से शरीर में विषद्रव्य ही पैदा होते हैं। आइये हम देखते हैं कि इन पदार्थों को खाने-पीने के क्या परिणाम होते हैं। चाय-कॉफी पीजिये और अपने पाचन-तंत्र का नाश कीजिये।

चायपत्ती में 11 तरह के जहर होते हैं -
1. टैनिन - यह 18 प्रतिशत होता है। यह चमड़े को रंगने व कड़ा करने के काम आता है। यह



ऑटों को सतह को कड़ा करता है। भूख व पाचनशक्ति को मन्द करता है। इससे गैस के रोग तथा पेट में घाव (Gastritis & Peptic Ulcer) हो जाते हैं। 2. कैफेन - यह 2.75 प्रतिशत होता है। इससे पेट में तेजाब बढ़ जाने से उच्च रक्तचाप, अनीमिया, सरदर्द, अनिद्रा, गठिया, कमजोर गुर्दे, विटामिन 'बी' का अभाव, हृदय रोग, लीवर रोग, बालों का असमय सफेद होना, देखने-सुनने व स्मरण शक्तियों का कमजोर होना, स्नायु दौर्बल्य आदि रोग होते हैं। 3. थोइन - यह 3 से 6 प्रतिशत रहती है जो शरीर में खुरकौं, फेफड़ों और दिमाग में भारीपन पैदा करती है। यह एक प्रकार का एल्कोलाईड है जिसके नशे के प्रभाव के कारण मानव चाय का आदी हो जाता है। इससे फेफड़ों व मस्तिष्क पर अधिक कार्यभार पड़ता है, खुरकौं और क्लान्ति आती है। 4. पेमीन - यह पाचन क्रिया को विगाड़ता है। 5. वोलेटोल ऑयल - यह निद्रा को नष्ट करता है। नेत्र-रोग पैदा करता है। 6. साइनाइड - यह भयंकर विष भी चाय में पाया जाता है। 7. एरोमेटिक ऑयल - इससे आँतों में खुरकौं पैदा होती है। 8.

अपेक्षाओं पर निर्भर न हो हमारी खुशी का पैरामीटर

प्रश्न:- इससे पहले हमने अपेक्षाओं की बात की थी। जैसे हमने बिलीफ सिस्टम पर भी बात की थी। मैं सभी पाठकों के साथ आपके जो भी अनुभव हैं उन्हें शेयर करना चाहती हूँ। कभी-कभी फीलिंग इतनी गहरी हो जाती है कि हमें पता ही नहीं चल पता कि कौन सा वो थॉट था, जिससे हमारा ये बिलीफ सिस्टम बना। इससे बहुत ही आश्चर्यजनक परिणाम हमारे सामने आये।

उत्तर:- उसमें भी बिलीफ ही है। मैं विश्व से कुछ आशा करती हूँ, विश्व माना सब कुछ, हरेक ने कहीं न कहीं हमने भी ये धारणा बना ली है कि जैसा मैं चाहती हूँ सब कुछ वैसा ही होना चाहिए। जैसे आपने कहा कि हमें पता थोड़े ही है कि हम वास्तव में इतनी सारी अपेक्षा कर रहे थे। हमें कैसे पता चलता कि मैं किसी से कुछ उम्मीद कर रही थी। साधारण सी बात मान लो कि मैंने उम्मीद की थी कि मेरे घर के नल में 24 घंटे पानी आवेगा। आज सुबह नल खोला तो उसमें पानी नहीं आया। मैं ये नहीं सोचती थी कि पानी नहीं आवेगा। लेकिन जिस दिन पानी नहीं आया उस दिन हम परेशान हो जाते हैं। क्योंकि इस परेशानी से हमें यह पता चलता है कि हमारी कुछ अपेक्षायें थी जो पूरी नहीं हुई। अपेक्षा वैसे पता नहीं चलेगी कि हमारी कितनी सारी अपेक्षायें हैं। जब कोई चीज हमारे अनुसार नहीं होती तब हमें पता चलता है कि हमने दूसरों से कितना उम्मीद किया हुआ था। हमें यह अपेक्षा करना चाहिए कि पानी आये तो ठीक, न आये तो भी ठीक। इसे अपेक्षा नहीं कहेंगे।
प्रश्न:- कुछ ऐसी बात हुई जिसने मुझे तंग किया। लेकिन यहाँ पर मैं एक बात कहना चाहती हूँ कि कुछ तो 'कोड ऑफ कंडक्ट' होते हैं, मतलब हम समाज में हैं, इसके कुछ

अपने नियम कानून होते हैं। जो मेरे एक्सपेक्शन और नॉन एक्सपेक्शन से परे हैं। जीवन जीने का तरीका निश्चित किया हुआ है।

उत्तर:- सही समय पर पहुंचने का मतलब कि जो समय कहा है उससे भी पांच मिनट पहले पहुंचना। यह मेरा 'कोड ऑफ कंडक्ट' है। ये आपका 'कोड ऑफ कंडक्ट' हो सकता है, अगर हम पांच-दस मिनट लेट भी पहुंचें तो इससे क्या फर्क पड़ता है। कभी जल्दी भी पहुंच जायेंगे, कभी लेट भी पहुंचेंगे। इतना कुछ फर्क नहीं पड़ रहा है क्योंकि यह आपका 'कोड ऑफ कंडक्ट' है मेरा नहीं। लेकिन अब आपका 'कोड ऑफ कंडक्ट' और मेरा 'कोड ऑफ कंडक्ट' थोड़ा सा टकराने वाला है। ये तो छोटी सी बात है लेकिन ऐसा होता है। क्योंकि 'कोड ऑफ कंडक्ट' या मेरे अनुसार जीवन जीने का तरीका क्या है कि जो समय दिया है उस पर पहुंचना है। इट्स ओ.के. इतनी दूर से हम सफर करके आ रहे हैं, एक मिनट लेट हो गया कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। अब मैं प्रश्न पूछना शुरू कर दूँ 'कोड ऑफ कंडक्ट' के संबंध में तो यह क्या है?



ब.कु. शिवानी

प्रश्न:- लेकिन शिवानी बहन हर एक का मेरा 'कोड ऑफ कंडक्ट' तो नहीं हो सकता है ना।
उत्तर:- हर एक का अपना 'कोड ऑफ कंडक्ट' है। अगर आप देखो हम हरेक अपने सही और गलत के लिए स्वयं

ऑर्गेनिक एसिड - यह तेजाब जितना दिन भर में शरीर से बाहर निकलता है, उसका चार गुणा, शरीर में एक प्याले चाय से पैदा होता है। 9. कार्बोलेक एसिड - चाय पीने से यह तेजाब गैस रूप में पैदा होकर जीवन शक्ति घटाता है और बुढ़ापा शीघ्र लाता है। 10. साइनेजेन - यह लकवा, चक्कर आना, अनिद्रा रोग बढ़ाता है। 11. स्ट्रिक्निन - यह रक्त विकार, वीर्यदोष और नपुंसकता को बढ़ाता है।

मध्यप्रदेश संघवा की राजश्री गुप्ता, उम्र - 50 वर्ष, पिछले 20-25 वर्षों से पूरे शरीर में दर्द, माइग्रेन, सरदर्द, घुटनों का दर्द, गैस, एसिडिटी, पूरे शरीर में सूजन, मोटापा (80 किलो) से परेशान थीं। दिनभर में 3000 कड़कों आती थीं। जीवन जीना मुश्किल हो गया था। ज्यों-ज्यों दवा को, दर्द बढ़ता गया। सदा स्वस्थ जीवन पुस्तक पढ़कर स्वर्णिम आहार पढ़ाति चालू की। 2 मास में ही लगभग सभी बीमारियों से मुक्ति मिल गई। वजन 17 किलो कम हुआ। तो आइये, स्वर्णिम आहार पढ़ाति को अपनाकर गोली-दवाई-इंजेक्शन-बीमारी-अस्पताल-डॉक्टर-इलाज से मुक्ति पायें और सदा स्वस्थ जीवन का ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त करें।

M - 07791846188
healthywealthyhappyclub@gmail.com
संपर्क करें केवल 1pm से 3pm के बीच में

जिम्मेवार हैं। इसीलिए हम कहते हैं न कि सही और गलत व्यक्ति आपस में जुड़े हुए हैं। हरेक ने अपनी सही और गलत की परिभाषा अपने सुविधानुसार बनायी हुई है।
प्रश्न:- लेकिन कॉपी हमने तब तैयार की जब हम एक पूरे समाज में, परिवार में मर्यादाओं की बात करते हैं, नास्तिकता की बात करते हैं या कोई 'कोड ऑफ कंडक्ट' की बात करते हैं, जिसे हम अपनी ओर बढ़ते हुए देखते आ रहे थे। हमने उस तरह से इसको विकसित किया है।

उत्तर:- वो सारी चीजें जो आपने कहीं समाज, हमारी जाति, हमारा परिवार, निश्चित रूप से हमारे ऊपर इनका प्रभाव है। आप किस देश के रहने वाले हैं, आप किस जाति से संबंध रखते हैं, यह प्रभाव ही तो है। मान लो आप पंजाबी हैं तो इसका मतलब है कि सभी पंजाबी का एक समान ही 'कोड ऑफ कंडक्ट' होगा? नहीं। आप भारतीय हैं, आप भारत में रहते हैं, तो क्या सभी का 'कोड ऑफ कंडक्ट' एक ही होगा? नहीं। सभी भारतीयों में भी पंजाबी का सम 'कोड ऑफ कंडक्ट' होगा? नहीं। अगर सारे कल्चर का प्रभाव भी अगर हम लें, देश का, जाति का, परिवार का भी हम ले लें, बड़े परिवार को तो छोड़ें, छोटे से परिवार में चार लोग भी रहते हों, तो क्या सभी का एक जैसा 'कोड ऑफ कंडक्ट' हो सकता है? नहीं। हमारे जाति और संस्कृति का, अगर हम घर में चार हैं तो चारों के ऊपर उसका थोड़ा-थोड़ा प्रभाव तो पड़ेगा ही। लेकिन फिर हरेक ने अपना-अपना 'कोड ऑफ कंडक्ट' कैसे बना लिया? आपके पास भी यह कभी नहीं होगा कि सारे लोग एक ही थॉट के साथ चलें, ये कभी नहीं हो सकता है। - क्रमशः

सहनशीलता

सच्चा आत्मिक स्नेह शक्ति देता है। इस शक्ति से ही परमात्म त्वाय दृढ़ होता है। यह शक्ति हिम्मत का स्रोत है। हिम्मत का पहला कदम समर्पण है तो दूसरा कदम सहनशीलता है।

सहनशील कोई भी परिस्थिति में उदास नहीं होता। हंसते-हंसते समस्या का सामना करता है। उन्हें खेल समझ हल्का रहता है। तिल का ताड़ नहीं करता बल्कि पहाड़ को गंद बनाकर विस्तार को सार रूप में समता है। 'नधिगन्धू' का पाठ पक्का कर बातों को विराम देता है ताकि मामला सुलझे, बिगड़े नहीं। ऐसी आत्मा सदा ज्ञान-योग में स्थित रह समस्याओं से, किसी भी व्यक्ति, वैभव से प्रभावित नहीं होती। ब्रह्मा बाबा इसकी जीती-जागती मिसाल थे। इसलिए वह सदा समर्थ स्वरूप रहे।

सहनशीलता की धारणा हमारे शान्त स्वरूप पर निर्भर होती है। ताल ठोककर जवाब देनेवाले को दुनिया तेजस्वी समझती है, लेकिन यह तेज नहीं है। सहनशील ही वास्तव में



अधिक तेजस्वी है। बड़े लोग कार्य-व्यवहार में बहुत बार टिपणें दिखते हैं लेकिन आम आदमी भी कई बार अपनी सहनशीलता, दिलेरी से आकाश छू लेते हैं। सहनशीलता का रंग सग से भी सहज लगता है।

एक बार तथगत ने अपने शिष्यों को कहा "भिक्षुओं, तुम्हें एक कठिन जिम्मेवारी पर दूसरे देश में जाना है। वहां जाके तुमने वहां के लोगों को कुछ कहा और उन्होंने सुना नहीं, तो तुम क्या करोगे?"

"भगवन, ऐसा हुआ तो हम समझेंगे कि यहां के लोग कितने अच्छे हैं। उन्होंने सुना नहीं यह सच है, फिर भी हमको गाली तो नहीं दी।" फिर बुद्ध बोले, "ठीक है, समझो उन्होंने तुम्हें गाली दी, अपशब्द उच्चारें तो?" शिष्यों ने जवाब में कहा, "फिर भी हम समझेंगे कि ये लोग कितने सज्जन हैं। इन्होंने गाली दी, अपशब्द उच्चारें, मारपीट तो नहीं की।" "और समझो, उन्होंने तुम्हें मारपीट तो?" बुद्ध ने फिर पूछा। "फिर भी हम कहेंगे कि ये लोग कितने भले, नेक इंसान हैं क्योंकि उन्होंने हमारी जान तो बकशी।" शिष्यों ने उत्तर दिया। "समझो, उन्होंने तुम्हारी जान ही ले ली तो?" "फिर भी हम यही कहेंगे कि यहां के लोग कितने सज्जन हैं। इन्होंने हमें ईश्वर का काम करते हुए ईश्वर के चरणों तक तो पहुंचा दिया।"

शिष्यों का उत्तर सुनकर तथगत मुस्कराये। फिर कहने लगे "भिक्षुओं, जाओ,

आगे बढ़ो, तुम परीक्षा में उत्तीर्ण हो गये।"

सहनशीलता को ऐसी ही पराकाष्ठा हमारे पुरुषार्थ में शिवबाबा चाहते हैं। तभी हम ऊंच पद के अधिकारी हो सकेंगे। जीवन एक रण-भूमि है। जो रणछोड़-दासों से भरी पडी है। आने वाला समय बड़ा कठिन है। ऐसे समय में परिस्थितियों का सामना करने के लिए सहनशक्ति को प्रचंड रूप में बढ़ाना होगा। ऐसी हालत में मम्मा (जगदम्बा) भी हमेशा तीन शक्तियों के वरदानों की सौगत साथ रखने का बच्चों से अनुरोध करती थीं।

1. समेटने की शक्ति। 2. सहनशक्ति। 3. सामना करने की शक्ति।

समेटने की शक्ति से हम नष्टोमोहा होंगे, बुद्धि एक में एकाग्र होगी। सहन करने से हल्के रहेंगे, उमंग-उत्साह, चमक बढ़ेगी। सामना करने की शक्ति से बलशाली होंगे।

सहनशीलता कमजोरी नहीं है। वह वीरता का श्रृंगार है। उदारता से क्षमा करना यह आत्मा की महानता है। गुरुदेव रानाडे बड़े आध्यात्मिक

पुरुष थे। उनके पास एक बार एक सज्जन

आये। उनसे कोई भूल हुई थी इसलिए वो

गुरुदेव से क्षमा मांग रहे थे। गुरुदेव बोले, "मैं

क्षमा नहीं करूंगा।" तब उस सज्जन ने कहा

"आप मुझे दीक्षा देंगे और क्षमा नहीं करेंगे?"

इसके उपरान्त गुरुदेव ने कहा कि दीक्षा देने

के लिए जितनी शक्ति लगती है, उससे ज्यादा

शक्ति क्षमा करने के लिए चाहिए। लेकिन

अगर आप क्षमा ही चाहते हैं तो अधिक समय

नेक-साधना करो।

सचमुच यही सही रास्ता है।

अंतःकरण की शुद्धि के लिए साधना-

तपस्या यही उपाय है। योग्य पुरुषार्थ है।

इसीसे ही सकारात्मक विचार करने की

ताकत आती है। नकारात्मकता, यह जीवन

यात्रा में एक भुलाव है। उससे आगे बढ़ने

के वजाए हम फिर से मूल स्थान पर आ

जाते हैं। सहनशीलता हमें सकारात्मकता

का पाठ पढ़ाती है। जीवन जीने की नई

दृष्टि देती है।

सहनशीलता हमें सहिष्णु बनाती है।

सहिष्णुता का मायना यह नहीं कि दूसरों से

उदासीन दृष्टि रखें। बल्कि उनका न्यारापन,

उनकी भिन्नता भी अपनानें, उनका आदर करें।

पिण्डे-पिण्डे मतिर्भिनः। विचारों की, मतों की,

संस्कारों को विविधता तो स्वाभाविक ही है।

शिवबाबा ने भी हमें हमारे गुण, भिन्नता,

विशेषताओं के साथ स्वीकार किया, वहां

छलनी नहीं लगाई। परंतु सबको संस्कार

परिवर्तन की एक ही श्रीमत् दी, कोई भेद नहीं किया। एक ही समझ, एक ही शिक्षा दी। यह प्रभु को दिव्यता ही विश्व परिवर्तन का आधार है।

समाज में रहते कई बातें होती हैं। मान-अपमान, निंदा-स्तुति, हार-जीत। लेकिन सहनशीलता के अभाव में या कमी के कारण एक खेल शुरू होता है। कोई झूठ बोला तो क्रोध आता है, सहयोग नहीं मिला तो नाराज होते हैं। इस प्रकार प्रभावित होना कतई समझदारी नहीं है। सहनशील समझदार होता है।

रिश्तदारों में, मित्र-सम्बन्धों में आत्मियता, दिव्यता लाने के लिये सहनशीलता जरूरी है। कल्याण के लिए शुभ-भावना, शुभ-कामना, कल्याण की वृत्ति रखनी है। बदले में कोई अपशब्द, कटुवचन कहे, बैर करे, हसद करे तो उसे उसकी कमजोरी, दुर्बलता समझ, लाचारी समझ नज़रअंदाज करना है। अपनी कल्याण की वृत्ति से उसे सहनशीलता का पाठ पढ़ाना है। सहनशक्ति श्रेष्ठ शक्ति है, सद्गुण भी है। मुझे सहनशक्ति का अवतार बन औरों को शान्ति की अनुभूति करानी है। मेरे संस्कार परिवर्तन का, निष्काम, निःस्वार्थ, सच्ची सेवा का आधार मेरी सहनशीलता ही है। सहनशील, शक्ति स्वरूप आत्मायें ईश्वर को भी भाती हैं।

एक बार मुहम्मद पैगम्बर अपने अनुबकर नामक शिष्य के साथ जा रहे थे। रास्ते में विश्राम के लिये दोनों एक जगह रुक गये। वहां रुके हुए एक व्यक्ति ने अनुबकर को बेवजह गाली दी। तथापि, अनुबकर ने उधर ध्यान नहीं दिया। फिर उस व्यक्ति ने गुस्से में आकर ढेर सारी गालियां सुनाई। फिर भी अनुबकर चुप रहे। उस व्यक्ति ने फिर बौखलाहट में गाली को बौछार शुरू कर दी।

फिर क्या? अनुबकर के सब्र का बांध टूट गया। उसने भी जमकर गाली दे दी। यह देखकर पैगम्बर नाराज हो गये और उठकर जाने लगे। अनुबकर भी पीछे-पीछे चल दिये। फिर पैगम्बर को बोले, "हुजूर, ऐसा क्यों?"

पैगम्बर बोले, "अनुबकर जब तक तू चुप था तब तक अल्लाह का फरिश्ता तेरे साथ था, लेकिन जैसे ही तूने चुप्पी तोड़ी, वह फरिश्ता तेरा साथ छोड़ चलता बना।" हर हाल में सहनशीलता ही हमें शान्त, अचल, साक्षी रख सकती है। यह भूलना नहीं है। महापुरुषों में परिस्थिति-जन्य आघात, प्रहार, उद्रेक सहन करने की क्षमता होती है। पुरुष के पास शारीरिक बल होता है, लेकिन भाव-जीवन में नारी ही अधिक सहनशील होती है। इसीलिए शावद परमात्मा ने भी यज्ञ-कलश माताओं के सिर पर रखा होगा।

हमारी वेदना का बोझ ईश्वर ही ढोता है। नम्रता, करुणा, सहनशीलता, इन गुणों से केवल संस्कार ही श्रेष्ठ नहीं होते, हमारा जीवन भी समृद्ध और खुशबूदार होता है। सहनशीलता ही हमें देही-अभिमानि बनाती है। वाकई हम आत्म-तत्व को दखल नहीं देते। देह एक तुरंग है। इस तुरंग में एक बंदी है। उसपे कोई ध्यान नहीं देता। कवि रविन्द्रनाथ जी अपनी 'गीतांजली' में कहते हैं - लोग केवल तुरंगों की दीवारों की चिंता करते हैं, लेकिन सच में बंदी रूपी आत्म-तत्व की फिक्र करने की दरकार है। विवेक से अगर इस तत्व की देखभाल हो तो वह हमारे तुल्य हो जायेगा। 'शिव बाबा भी तो यही -शेष पेज 8 पर



वीकानेर-राज.। ब.कु. रजनी के हुए भव्य समर्पण समारोह में सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी।



अतुल-गुज.। 'बैलेन्सशॉर्ट ऑफ लाइफ' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सुनील लालभाई, चैयरमैन, अतुल ग्रुप ऑफ कंपनी, ब.कु. शिवानी, ब.कु. रोहित व ब.कु. रंजन।



कलावत-हरियाणा.। पंजाब केसरी के वरिष्ठ पत्रकार कुलदीप मित्तल को ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए ब.कु. दीपक, माउण्ट आबू। साथ ही ब.कु. रंखा, ब.कु. कविता व ब.कु. अजीत।



मजुरागेट-सुरत.। बैंक ऑफ बड़ौदा, सुरत द्वारा आयोजित 'हेल्दी एंड हैपी लिविंग' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए ब.कु. डॉ. सविता, माउण्ट आबू, ब.कु. सोनल, चौफ मैनेजर रवि मल्होत्रा तथा अन्य।



विजयवाड़ा-आ.प्र.। आध्यात्मिक कार्यक्रम के परचाट ए.पी.एस.पी. सिक्ख बटालियन कमाण्डेंट हुसेन शेख, ब.कु. अशोक गाबा, ब.कु. परमजान, ब.कु. राधा तथा ब.कु. नागमर्ण।



दुर्ग-छ.ग.। नव-निवृत्त कलेक्टर आर. संगीता को ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए ब.कु. रोटा। साथ ही ब.कु. आस्था।

माधुर्य का महत्व

- ब्र.कु. शोभिका, शांतिवन



गांधीनगर। केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति इरानी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. केलाश।



मोतिहारी-विहार। केन्द्रीय कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सीता।



पुणे-वोपोंडी। 'अलविदा डायबिटीज़' शिबिर के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित हैं ब्र.कु. सुनीता, डायबेटिक विशेषज्ञ डॉ. श्रीमन्त साहू, ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. पार, डॉ. डी.वाय. पाटील मॉडिकल कॉलेज के डीन प्रो. अमरजीत सिंह, सोमेश्वर फाउंडेशन के अध्यक्ष तथा पूणे के विधायक कार्यसम्राट विनायक निम्हण, ब्र.कु. सुनील तथा अन्य।



दिल्ली-आर.के.पुष्प। वृक्षारोपण करने के पश्चात् समूह चित्र में राकेश सिंघल, डी.जी.सेवा भवन, कर्नल मोहन, डायरेक्टर सी.सी.सी. आई. लि., मि. सिद्ध, रिटायर्ड विंग कमांडर, मि. धर्मवीर, काउंसलर, ब्र.कु. अनिता, ब्र.कु. ज्योति, संजय वर्मा, राजेश वर्मा तथा अन्य।



मेलवॉर्न। मधुवन से ब्र.कु. रामलोचन व ब्र.कु. सूर्यमणि के सिंगारपुर, ऑस्ट्रेलिया व थाईलैण्ड में रिटोट करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. भाई बहनें।



भरतपुर। मातेश्वरी के स्मृति दिन पर संबोधित करते हुए ब्र.कु. कविता, मंचासीन डॉ. मुदगल, मिशाल कालार, आयकर अधिकारी, देवनाजी, जिला सिन्धी समाज अध्यक्ष, भरतपुर तथा अन्य।

माधुर्य से मनुष्य में नम्रता, शिष्टता, सहृदयता आदि उदात्त गुणों का उदय होता है, जिनसे जीवन प्रकाशपूर्ण और शांत बन जाता है, क्रोध उसके पास नहीं आता है, क्रोध मानव जाति का सबसे बड़ा शत्रु है, क्रोध से मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है, उसे उचित-अनुचित का विचार नहीं रहता। मृदुभाषी कभी क्रोध नहीं करता, कभी किसी से ईर्ष्या-द्वेष नहीं करता, वह सबको स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखता है। मृदुभाषी समाज में सद्भावना और सह-अस्तित्व का संचार करता है। इस प्रकार वह समाज के उत्थान में भी सहयोग देता है।

क्या बेचारा कौआ किसी का कुछ लेता है? यदि नहीं तो, फिर लोग उसे आराम से अपने घरों की छतों पर, मुडेरों पर, क्या नहीं बैठने देते? घृणा यहाँ तक बढ़ गई है कि उसके दर्शन को भी अपशगुन समझा जाने लगा है। किसी शुभ कार्य के लिए जाने से पूर्व लोग दिखा लिया करते हैं कि बाहर कौआ तो नहीं बैठा है। इसके विपरीत कोयल समाज को क्या देती है? समाज उसकी वाणी को शुभ और दर्शनों को प्रिय क्यों समझता है? सोने के पिंजड़ों में बंद होकर कोयल राज-दरबार को शोभा बढ़ा सकती है तो क्या कौए को पिंजड़ों में बंद होकर किसी झोपड़ी में चार चाँद लगाने का अधिकार नहीं? यह व्यवहार विभेद प्राणी के गुण-अवगुणों पर आधारित है। यदि आदम में गुण है तो आप परायें को भी अपना बना सकते हैं। मधुर भाषण से मनुष्य, पशु-पक्षी भी प्रिय बन सकते हैं। यह वह रासायन है जिससे लोहा भी सोना बन जाता है, यह वह औषधि है, जिससे मानव के समस्त हृदय के विकार दूर हो जाते हैं, यह वह वशीकरण मंत्र है, जिससे आप दूसरों के हृदय में बैठ जाते हैं, यह वह बाण है, जिससे मनुष्य के हृदय में घाव नहीं होता, अपितु स्नेह की मधुर व्यथा उत्पन्न हो जाती है। यह वह अमृत है, जिससे मृत प्राणों में भी जीवन का संचार हो उठता है। जीवन और जगत को सुखी और शांत

बनाने के लिए माधुर्य से अधिक लाभदायक वस्तु और क्या हो सकती है। श्रोता और वक्ता दोनों को आनंद-विभोर कर देने वाली यह मधुर वाणी समाज की पारस्परिक मान-मर्यादा, प्रेम-प्रतिष्ठा और श्रद्धा-विश्वास का आधार-स्तंभ है। इसके अभाव में समाज कलह, ईर्ष्या-द्वेष और वैमनस्य का घर बन जाता है। जिस समाज में पारस्परिक सौहार्द और सहानुभूति नहीं, वह समाज नहीं नरक है। मधुर बोलने वाले मनुष्य का समाज में आदर होता है। मधुरभाषी के मुख से निकला हुआ एक-एक शब्द सुनने वालों का जी लुभाता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो इसके मुख से फूल झड़ रहे हों। सम्पर्क में आने वाले असंबंधित व्यक्ति भी अपने बन जाते हैं और उसका आदर करने लगते हैं।

मीठे वचन बोलने से केवल श्रोता को ही आनंद नहीं आता बल्कि वक्ता को भी आत्मा आनंद का अनुभव करती है। कहने और सुनने वाले दोनों को शांति लाभ होता है, परंतु वक्ता को एक विशेष लाभ यह होता है कि उसके मन की अहंकारी, दम्भ और गौरवपूर्ण भावनाएं स्वतः ही समाप्त हो जाती हैं। अहंकारी व्यक्ति कभी मधुर-भाषी नहीं हो सकता, दूसरे के हृदय को दुःखी करने में वह अपना जी-बहालव समझता है।

माधुर्य से मनुष्य में नम्रता, शिष्टता, सहृदयता आदि उदात्त गुणों का उदय होता है, जिनसे जीवन प्रकाशपूर्ण और शांत बन जाता है, क्रोध उसके पास नहीं आता है, क्रोध मानव जाति का सबसे बड़ा शत्रु है। क्रोध से मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है, उसे उचित-अनुचित का विचार नहीं रहता। मृदुभाषी कभी क्रोध नहीं करता, कभी किसी से ईर्ष्या-द्वेष नहीं करता, वह सबको स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखता है। मृदुभाषी समाज में सद्भावना और सह-अस्तित्व का संचार करता है। इस प्रकार वह समाज के उत्थान में भी सहयोग देता है।

बड़े-बड़े शस्त्रों का प्रहार वह काम नहीं कर सकता, जो मनुष्य की कटु वाणी कर देती है। शस्त्रों के घाव चिकित्सा से भर जाते हैं, पर वाणी के घावों की कोई चिकित्सा नहीं, समय-समय पर उसमें ऐसी टीस उठती है कि मनुष्य तिलमिला जाता है। कटु वाणी से मनुष्य दूसरों के हृदय को तो दुखाता ही है, परंतु स्वयं भी स्थान-स्थान पर अनादर का पात्र बन जाता है। कड़वा बोलने वाले से

वर्तमान परिवेश में मनुष्य ने भौतिकता के आधार पर बहुत प्रगति की है किंतु मूल्यों के मामले में बहुत पिछड़ रहा है। समाज सेवकों को गहन चिंतन करने और दूसरों के कल्याण के लिए सदैव चिंतित रहने की ज़रूरत है। ए.एन. जिंदल, पूर्व जस्टिस, पंजाब हरियाणा उच्च न्यायालय ने कहा कि लोक कल्याण और देश के विकास के लिए सामाजिक कार्यकर्ताओं का मतभेदों को भुलाकर एकमत होना, यही समय की मांग है, तभी हम भारत को सोने की चिड़िया बनाने में कामयाब हो सकेंगे। प्रभाण उपाध्यक्ष ब्र.कु. अमीर चंद ने कहा कि समर्पणमयता को भावना की शिक्षा को जीवन में अंगीकृत करने से जैन कल्याण की भावनाओं को बल मिलेगा। प्रभाण के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. प्रेम, मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. अवतार, अधिशासी सदस्य ब्र.कु. सीता आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

अध्यात्म से -पेज 1 का शेष...

आगे खुली किताब की तरह है। समाजोत्थान के पहले स्वोत्थान पर ही ब्रह्माकुमारों में जोर दिया जाता है। उन्होंने कहा कि राजयोग एक ऐसी औषधि है जो मन की दूषित भावनाओं को समाप्त कर देता है।

वाई.पी. दास, रोटीरी प्रांतपाल, सुनाम ने कहा कि समाज को मूल्यनिष्ठ बनाने के लिए सर्वप्रथम स्वयं को उत्तम विचारों के आयाम देने होंगे। मानवीय मस्तिष्क में जितने अधिक शांतिदायक विचार उत्पन्न होंगे उससे उतना ही अधिक मानसिक शक्ति का विकास होगा। उन्होंने कहा कि अध्यात्म से ही विज्ञान का भी सद्प्रयोग होगा और वैज्ञानिक गतिविधियां समाज को मूल्यनिष्ठ बनाने में सहायक सिद्ध होंगी। प्रकाश पोडवाल, उपाध्यक्ष, नेपाल बैंक ऑफ कॉमर्स ने कहा कि

वर्तमान परिवेश में मनुष्य ने भौतिकता के आधार पर बहुत प्रगति की है किंतु मूल्यों के मामले में बहुत पिछड़ रहा है। समाज सेवकों को गहन चिंतन करने और दूसरों के कल्याण के लिए सदैव चिंतित रहने की ज़रूरत है।

ए.एन. जिंदल, पूर्व जस्टिस, पंजाब हरियाणा उच्च न्यायालय ने कहा कि लोक कल्याण और देश के विकास के लिए सामाजिक कार्यकर्ताओं का मतभेदों को भुलाकर एकमत होना, यही समय की मांग है, तभी हम भारत को सोने की चिड़िया बनाने में कामयाब हो सकेंगे। प्रभाण उपाध्यक्ष ब्र.कु. अमीर चंद ने कहा कि समर्पणमयता को भावना की शिक्षा को जीवन में अंगीकृत करने से जैन कल्याण की भावनाओं को बल मिलेगा। प्रभाण के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. प्रेम, मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. अवतार, अधिशासी सदस्य ब्र.कु. सीता आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान- मैं सम्पूर्ण पवित्र आत्मा हूँ।

सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं, लेकिन ब्रह्मचारी बनकर रहना। ब्रह्मचारी अर्थात् सदा ब्रह्मा बाप के आचरण पर चलने वाला। कोई भी विकार अंश मात्र भी न हो तब कहेंगे - सम्पूर्ण पवित्रता।

योगाभ्यास - रूहानी ड्रिल - विज्ञान बनाएं - लाइट के शरीर में भूकटि के मध्य मैं सम्पूर्ण पवित्र आत्मा चमक रही हूँ। मुझसे पवित्रता की श्वेत रश्मियां चारों ओर फैल रही हैं। इसके बाद अनुभव करें कि मैं परम पवित्र फरिश्ता ग्लोब पर स्थित होकर विश्व की सर्व आत्माओं को सकाश दे रहा हूँ। स्वयं को परमधाम में पवित्रता के सूर्य की किरणों के नीचे देखें, उनसे पवित्रता की अथाह किरणें निकलकर मुझ पर बरस रही हैं और मुझे भरपूर कर रही हैं।

धारणा - पवित्रता। मरजीवा ब्राह्मण जन्म लेते ही बाबा ने हम सभी बच्चों को पवित्र भव और योगी भव का वरदान दिया है। तो पवित्रता इस ब्राह्मण जीवन का वरदान है। जिसके अंदर जितनी अच्छी पवित्रता उसका

उतना ही अच्छा योग। अगर योग नहीं लगता तो जरूर कहें न कहीं सुक्ष्म में अपवित्रता है। तो योग का सम्पूर्ण सुख लेने के लिए अपनी पवित्रता को स्थिति को मजबूत बनाएं। इसके लिए - सारा दिन आत्म-अभिमानि स्थिति में रह सर्व को आत्मिक दृष्टि से देखें। मैं सम्पूर्ण पवित्र आत्मा हूँ - इस स्वमान का सारे दिन में बार-बार गहराई से अभ्यास करें।

चिन्तन - क्या सारे दिन में मनसा, वाचा कर्मणा की पूरी पवित्रता रही और यदि नहीं तो क्यों? सम्पूर्ण पवित्र आत्माओं को क्या-क्या निशानियां होंगी? सम्पूर्ण पवित्रता को स्थिति तक कैसे पहुंचा जाए?

याद रहे - बापदादा की दिल पसंद स्थिति है - सम्पूर्ण पवित्रता। इसलिए सम्पूर्ण पवित्र बच्चे ही उसे सबसे अधिक प्रिय लगते हैं। साधकों प्रति - हे बापदादा की आशाओं के दीपक! क्या तुम उसकी आशाओं को पूर्ण करना चाहते हो? यदि हाँ, तो अब उसकी यही आशा है कि अलबेलेपन, आलस्य और

बहानेबाजी की नींद से जागो...। ऐसे नहीं सोचो कि कौन अभी सम्पन्न बना है...कर लेंगे...बन ही जाएंगे...अब यह गे...गे...की भाषा को छोड़ी और दृढ़ सकल्य करो कि अब बनना ही है करना ही है। चाहे पहाड़ जैसी परिस्थिति आ जाए...कुछ भी सुनना पड़े या सहन करना पड़े...लेकिन अब हमें अपनी दृढ़ता से पीछे नहीं हटना है...अब मुझे दूसरे को नहीं देखना है...मुझे स्वयं को देखना है...मुझे स्व को देखना है और स्व को ही परिवर्तन करना है...तब कहेंगे बापदादा की आशाओं को पूर्ण करने वाले ब्राह्मण कुल दीपक।

प्यारे बापदादा ने हम सभी को विशेष होमवर्क दिया कि दुआएं लेनी है और दुआएं देनी है...। कोई कैसा भी हो, चाहे कोई बटुआ दे...अपमान करें, तो भी हमें उसके प्रति अपनी भावनाओं को खराब नहीं करना है। ईश्वरीय महावाक्य हैं - जो बच्चे एक बार भी सहन कर लेते हैं वह सौ गुना परमात्म दुआओं के अधिकारी बन जाते हैं।

स्वमान - मैं परमात्म स्नेही हूँ।

जरा देखें, अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य को, स्वयं भगवान के स्नेह के पात्र बन गये...पांच हज़ार वर्ष तक तुम देवात्माओं के स्नेह के पात्र बने...लेकिन अब यह थोड़ा सा समय है, भगवान के स्नेह का पात्र बनने के लिए...और यह परमात्म-स्नेह इस थोड़े से समय में केवल तुम बच्चों को ही प्राप्त होता है...तो अपने को याद दिलायें...हे आत्मा! यदि तुमने परमात्म-स्नेह का अनुभव अब नहीं किया तो फिर कब करेंगे?

योगाभ्यास - मैं इष्ट देव हूँ - इष्टदेव बनकर भक्तों को पुकार सुनें...क्योंकि भक्त आत्माएं अब थक गई हैं...अब वो तुम्हें पुकार रही हैं...हे मेरे इष्ट देव आप कहें गये...हे दयालु, हे कृपालु...अब हमें मुक्ति दो...तो अब भक्तों की पुकार सुनो और उन्हें मुक्ति दिलाने के निमित्त

बनो। मैं मुक्तिदाता हूँ - तुम मुक्तिदाता के बच्चे मा. मुक्तिदाता हो...तुम्हें बाप समान मुक्तिदाता बन दुःखी अशान्त और परेशान आत्माओं को सुख-शान्ति के वायब्रेण्ड्स देने हैं...।

धारणा - मनसा, वाचा और कर्मणा, तीनों द्वारा एक साथ सेवा।

समय की समीपता प्रमाण अब बापदादा चाहते हैं कि मनसा-वाचा और कर्मणा इन तीनों द्वारा एक साथ सेवा हो। क्योंकि जैसे समय की गति फास्ट है...ऐसे आपको सेवाओं की गति में भी नवीनता हो...इसलिए मनसा द्वारा प्योर वायब्रेण्ड्स फैलाने की सेवा करें...वाचा द्वारा परमात्म ज्ञान दान करने की सेवा करें...और कर्मणा द्वारा स्नेह और सहयोग देने की सेवा करें।

चिन्तन - संगमयुग पर बाबा ने हमें क्या-क्या स्मृतियां दिलाई हैं? और हम उन स्मृतियों के स्वरूप बनकर कहाँ तक रहते हैं? स्मृति और समर्थी स्वरूप के अनुभव को कैसे बढ़ाएँ? और ऐसी आत्माओं की क्या-क्या निशानियां होंगी?

साधकों के प्रति - प्रिय साधकों! बापदादा अब हमारी प्रतिज्ञाओं की फाइल को फाइलन रूप में देखना चाहते हैं...इसलिए दृढ़ प्रतिज्ञा करो कि अब मुझे पुरानी भाषा को, पुरानी चाल को, अलबेलेपन की भाषा को, कडुवेपन की भाषा को बदलना ही है...इसलिए अब हमें दूसरों को न देख, दूसरों का चिन्तन न कर, स्वयं को देखना है और स्वयं का चिन्तन करना है...तब ही हम स्वयं को प्रत्यक्ष कर परमात्म प्रत्यक्षता कर सकते हैं।



दिल्ली। भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी के साथ शानचर्चा करने के पश्चात् समूह चित्र में ब.कु. वृजमोहन तथा अन्य ब.कु. बहनें।



वॉर्वेडॉस। ब.कु.शर्ला बेल के साथ आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् बार्बेडॉस के गवर्नर जनरल एलियट बेलप्रेव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब.कु. भारत भूषण।



भोपाल। एडमिनिस्ट्रेटर्स के लिए आयोजित मॉडिरेशन प्रोग्राम के पश्चात् समूह चित्र में ब.कु. अवधेश, ज्ञानल डायरेक्टर एंड नेशनल को-ऑर्डिनेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेटर्स सर्विस विंग, ब.कु. रानी तथा अन्य।



भिलाई नगर। 'अलविदा डायविटीज' शिबिर में सम्मोहित करत हुए डॉ. श्रीमंत साहू, माउण्ट आबू, ब.कु. आशा, प्रेम प्रकाश पाण्डेय, राजस्व, उच्च व तकनीकी शिक्षा मंत्री छ.ग., डॉ. एम.के. खंडूजा, सी.एम.डी., अपोलो हॉस्पिटल एवं ब.कु. माधुरी।



के.शोद-गुज.। दिव्य दर्पण युवा रिटोट लॉन्गिंग कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए प्र.गजेरा। साथ हैं डॉ.दिशा पोपट, ब.कु. कृति, ब.कु. रूपा, डॉ. प्रो. भूपेंद्रभाई जोषी व ब.कु. करण।



वाराणसी। 'सौरिच्युअल गेट टूगेदर एंड स्ट्रेस मैनेजमेंट' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए वी.पी. खरे, जेनरल मैनेजर, डी.एल.डब्ल्यू, ए.के. सिंह, मुख्य यांत्रिक अभियंता, आस्थाना जी, मुख्य विद्युत अभियंता, एस.पी. पिपलानी, भंडार निर्यंत्रक, ब.कु. सुरेंद्र, ब.कु. सरोज तथा अन्य।



दिल्ली-तोधी रोड। विश्व पर्यावरण दिवस पर गेल इंडिया लिमिटेड में 'पर्यावरण सुरक्षा हमारी सुरक्षा' विषय पर प्रवचन के बाद समूह चित्र में ब.कु. पीयूष, ब.कु. गिरिजा, वंदना चानना, कार्यकारी निदेशक, सुनील कुमार, महाप्रबंधक तथा अन्य।

परमात्मा समयचक्र में पुनः श्रेष्ठ जीवन-शैली स्थापित करते हैं



इन्दौर। लोकसभा स्पीकर सुमित्रा महाजन के साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. हेमलता। साथ हैं ब्र.कु. अनिता, ब्र.कु. शकुंतला, ब्र.कु. अंबिका तथा अन्य।



भावांगर। 'जीवन में आध्यात्मिकता का महत्व' विषय पर आयोजित शिविर के परचात् कुमारियों के साथ ब्र.कु. कृष्णा, ब्र.कु. शीतल तथा ब्र.कु. सागर।



हाथरस। एन.सी.सी. बटालियन के जे.सी.ओ., एन.सी.ओ. तथा सिविल स्टाफ के लिए आयोजित सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शान्ता।



कर्मगंज-असम। पत्रकारों के साथ वार्तालाप के परचात् समूह चित्र में ब्र.कु. भगवान, माउण्ट आबू, पत्रकारगण तथा अन्य।



मोहाली। 'वाह जिन्यो वाह' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. प्रेमलता।



गोवरा-छ.ग.। एक दिवसीय मूल्य शिक्षा प्रशिक्षण कार्यशाला में अपने विचार व्यक्त करते हुए ब्र.कु. विन्दु।

आज ये संसार जिस तरह से अनेक समस्याओं की स्थिति से गुजर रहा है, उसमें कई बार मनुष्य की स्थिति कितनी संकटमय बन जाती है। इस कारण से वो परिस्थितियों का शिकार बनता जा रहा है। उसको लेकर कितने युद्ध इस संसार में होने लगे हैं। जब अधर्म अपनी चरम सीमा को प्राप्त कर लेता है, हर प्रकार की बुराइयों संसार में अहित में चली जाती हैं, ऐसी अति की स्थिति को परिवर्तन करने के लिए भगवान को अपने वायदेनुसार आना ही पड़ता है। गीता ज्ञान के अनुसार वे अपने किये हुए वायदे को निभाने के लिए इस संसार में अवतरित होते हैं। पुनः मनुष्य को योगयुक्त बनाते हुए, उसको श्रेष्ठ गति को प्राप्त करने की विधि बतलते हैं कि जीवन में श्रेष्ठता को कैसे लाया जाए? जीवन कैसे जीना होता है? ये विधि उनको फिर से बतानी पड़ती है। कहा जाता है कि महाभारत जो हुआ, वो कुरू परिवार में हुआ। कुरू शब्द का अर्थ है 'करो अथवा करना' पाण्डव और कौरव 'कुरू' परिवार के सदस्य थे। यहां पर प्रश्न उठता है कि पांडव किसको कहेंगे और कौरव किसको कहेंगे? शास्त्रों में दिखाते हैं कि जब दोनों में कई प्रकार के मतभेद की बातें हो गयी तो उनका इकट्ठा रहना मुश्किल हो गया। तब दोनों ही भगवान के पास मदद मंगाने के लिए जाते हैं। पाण्डव की ओर से अर्जुन जाता है और कौरव की ओर से दुर्योधन जाता है। उस समय कहा जाता है कि अर्जुन विनम्र भाव से हाथ जोड़कर भगवान के पैरों के पास खड़ा होता है और दुर्योधन जो अहंकार का प्रतीक है,

वह सर के पास जाकर बैठता है। जब दोनों भगवान से मदद मांगते हैं तब दुर्योधन पहले अपना हक जताते हुए कहता है कि यहाँ पहले मैं आया हूँ इसलिए पहले मांगने के लिए मुझे कहा जाए तो भगवान मुस्कराते हुए कहते हैं ठीक है, पहले तुम मांगो। उस वक्त भगवान ने उनसे पूछा कि तुम्हें क्या चाहिए? एक तरफ मैं हूँ तो दूसरी तरफ अक्षीणी सेना है तुम्हें क्या चाहिए? जिस तरफ मैं रहूँगा, मैं युद्ध नहीं करूँगा। उस समय दुर्योधन भगवान की शक्ति को पहचान नहीं पाया। इसलिए उसने सोचा कि अगर भगवान युद्ध करने वाले ही नहीं हैं तो उनको मांगने से क्या फायदा! इसलिए उसने कह दिया कि मुझे आक्षीणी सेना चाहिए। भावार्थ यह है, जैसे कहा गया है कि 'विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति' जब उसके विनाश का समय आ गया तो ऐसे समय में उसकी भगवान के साथ प्रीत ही नहीं थी अर्थात् विपरीत बुद्धि थी। अर्जुन, जिसकी ईश्वर के साथ प्रीत थी, वो भगवान की शक्ति को बहुत अच्छी तरह से जानता था। भगवान अगर युद्ध नहीं भी करेंगे तो भी उनमें जिताने की क्षमता है। इसलिए उसने विनम्र भाव से कह दिया कि भगवान आप मेरे लिए सब कुछ हैं। भावार्थ यह है कि भगवान की शक्ति को पहचानने के लिए जीवन में

सहज राजयोग - पेज 3 का शेष

आत्मा हूँ इत्यादि जो हमें आत्मा का परिचय दिया गया उन थॉट्स से। योग के लिए कहा गया है कि योग का अर्थ है प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। स्वयं को विड़ो करना उस परमात्मा के साथ जुटकर वो प्यार हमारा निर्मल हो जाए। प्यार एक दैवी गुण है इसलिए परमात्मा को प्यार का सागर कहा जाता है। अगर संसार में हरेक में स्नेह प्यार हो तो ये संसार ही बदल जायेगा, सब गुण आ जायेंगे, संसार हरा-भरा हो जाएगा। दुःख और अशांति यहाँ से भाग जाएगा, तब मनुष्य में प्यार आ जाएगा। तीसरी एक जन्मजात योग्यता है सभी में स्वयं को बाँडी से डिटेच करने की, क्योंकि इस योग में भी हम अपने को शरीर से विड़ो करते हैं आत्मा के स्वरूप पर कि मैं ज्योतिर्बिंदु आत्मा हूँ, मैं शांत स्वरूप आत्मा हूँ, प्रेम स्वरूप

सहनशीलता - पेज 5 का शेष

चाहते हैं।' जो बातें हम बदल नहीं सकते, उन्हें स्वीकार करना ही समझदारी है, क्योंकि यह नई बात नहीं है। 'निथिगान्यु' यह इस पुनरावृत्त ड्रामा का स्थायीभाव है, सच्चाई है। सफलता की राह कठिन होती है। जो कुछ होता है वह हमारे कर्मों का फल है। यह समझ ही जीने की नई दृष्टि देती है, कर्म-भोग, कर्म-फल ही है।

वह सब कुछ कर सकते हैं तो हम भगवान से विपरीत हो जाते हैं। जो विपरीत हो गया वह विनाश को अवश्य ही प्राप्त करता है। ऐसी परिस्थिति में हमें किस प्रकार की मनोस्थिति का होना चाहिए ये श्रीमद्भगवद्गीता स्पष्ट करती है। कहा जाता है कि हर मनुष्य में दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ रहती हैं, एक दैवी प्रवृत्ति और दूसरी आसुरी प्रवृत्ति। - क्रमशः

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. उषा



हरेक में होती है वो है अटेन्शन। जिस किसी बात में हमारी रुचि होती है उस ओर हमारा खिंचाव स्वतः होता है जिसको ध्यान कहा जाता है। जिस कार्य को आप करना चाहते हैं आप अटेन्शन देते हैं। बच्चा स्कूल में पढ़ता है तो ब्लैकबोर्ड की तरफ या टीचर क्या कह रहा है उसकी तरफ अटेन्शन देता है, एक वैज्ञानिक कोई प्रयोग कर रहा है उस समय उसका पूरा अटेन्शन उस कार्य पर होता है। और उस अटेन्शन की भी डिग्रीज हैं। कभी ऐसा होता है कि आपका अटेन्शन थोड़ा हल्का है, कभी पूरा होता है, कभी आप बिस्कुल एकाग्र होते हैं उसमें पूरे तल्लीन होते हैं। ये जो अटेन्शन हैं वो योग में अपने परमपिता परमात्मा शिव पर जो परमधाम में है उसपर अपने मन को एकाग्र करने में ये योग्यता काम आती है। - क्रमशः

महाकाय वृक्ष बने जाते हैं। सहनशीलता मेरी मौलिक दौलत है। उसको धारणा से मेरी खुशी, प्रसन्नता, शांति सदा बनी रहेगी। सहनशीलता से श्रीमत का पालन सहज करते हुए चेंकिंग के साथ चेंज भी होंगे। सहनशीलता ही परिवर्तन का यथार्थ आधार है। जीना है, जीने दो, जीते-जीते जीवन का मजा लेना ही जीवन-मुक्ति का आनंद लेना है - ब्र.कु. गुणवंत, विनवेवाडी,पुणे

सहनशीलता हमें कर्मभोग चुकतू करने की हिम्मत देती है। ज्यादा, व्यर्थ, अनुचित कामनायें, इच्छायें हमारी सहनशीलता समाप्त करती हैं। हमें दुःखी, तंग करती हैं। रिस करनी है, रिस नहीं। उससे आत्मा कमजोर होती है। जो सहन करते हैं वही शहंशाह बनते हैं। सहनशील निरहंकारी होते हैं। वह व्यर्थ झगड़ा नहीं करते। समझदार झुकते भी हैं। बाढ़ में पटर स्वयं को बनाके-बचाके रखती हैं, लेकिन

कथा सरिता

धर्मनिष्ठता

किसी गांव में एक नीतिवान सज्जन रहते थे। एक बार एक यात्री अपनी बेटी के साथ उनके घर आया। रात्रि विश्राम के लिए उन्होंने आश्रय मांगा, तो सज्जन ने उन्हें सहर्ष आश्रय प्रदान कर दिया। भोजन के बाद अतिथि ने कहा - भद्र में कुछ दिनों के लिए दूरस्थ प्रदेश की यात्रा पर जा रहा हूँ। यदि आप मेरी कन्या को मेरे वापस आने तक अपने घर ठहरने दें, तो बड़ी कृपा होगी। सज्जन ने अनुरोध स्वीकार कर लिया। दिन गुजरते गए किंतु अतिथि नहीं आया। गांवभर में उस कन्या को लेकर चर्चाएं होने लगी। जिस गांव में सज्जन के व्यवहार की प्रशंसा होती थी, उसी गांव में अब उसकी आलोचना होने लगी।

एक बार रात में सज्जन ने स्वप्न में देखा कि उनके घर से यशालक्ष्मी जा रही है। इधर, सज्जन का व्यापार भी प्रभावित होने लगा। कुछ दिनों बाद उन्हें पुनः स्वप्न आया जिसमें उनके घर की सौभाग्यलक्ष्मी भी जाती दिखी। उन्होंने रुकने का अनुनय किया, पर वह भी नहीं रुकी। दिन-ब-दिन सज्जन के घर की हालत जर्जर होती गई और वे निर्धन हो गए। उन्होंने स्वप्न देखा कि धर्म भी उन्हें छोड़कर जा रहा है। इस पर उनसे रहा नहीं गया और उन्होंने धर्म से कहा - मैंने यशालक्ष्मी व सौभाग्यलक्ष्मी को इसलिए नहीं रोका कि तुम मेरे साथ हो। तुम जानते हो मैं अपने कर्तव्य पर दृढ़ हूँ, तुम मुझे छोड़कर नहीं जा सकते। उनकी यह बात सुनकर धर्म रुक गया। धर्म जब ठहर गया तो उन सज्जन के पास यशालक्ष्मी व सौभाग्यलक्ष्मी भी लौट आईं।

वास्तव में अतिथि पाप था जिसने अपनी पत्नी दरिद्रता को कन्या बताकर सज्जन के घर छोड़ रखा था। लेकिन उन सज्जन ने धर्म पर दृढ़ रहकर न केवल पाप के इरादे पर पानी फेर दिया वरन यह भी दिखा दिया कि मनुष्य विपरीत परिस्थितियों में भी यदि धर्म पर दृढ़ रहे तो उसे यश, मान व धन की प्राप्ति होकर ही रहती है।

मंत्री का चयन

एक बड़े साम्राज्य के प्रधानमंत्री का अचानक देहांत हो गया। राजा के सामने नए प्रधानमंत्री के चुनाव की समस्या आ गई। उन्होंने अपने राज्य में घोषणा करवा दी कि महाराज कल नए प्रधानमंत्री का चयन करेंगे, योग्य व्यक्ति पहुंचें। कई व्यक्ति इस पद के लिए राजा के सामने उपस्थित हुए। राजा ने अपने अनुसार चयन की प्रक्रिया शुरू कर दी। अन्तिम परीक्षा तक केवल तीन व्यक्ति ही राजा के सामने रह गए। जब तीन व्यक्ति बचे तो राजा चिंतित दिखाई देने लगे, क्योंकि अभी तक उन्हें कोई प्रधानमंत्री पद के लिए उपयुक्त व्यक्ति नहीं मिला था। राजा उन तीनों को लेकर एक छोटी-सी कोठरी के पास पहुंचे और सेवक से ताला मंगवाकर कहा - 'मैं आप तीनों को इस कोठरी में बन्द करके बाहर ताला लगा देता हूँ। जो ताला खोलकर बाहर आ जाएगा, वही प्रधानमंत्री पद के योग्य होगा। ताले की चाबी खिड़की से इस कोठरी में डाल दूंगा।' वे तीनों युवक कोठरी में खड़े-खड़े एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। राजा ने कोठरी का कपाट बन्द कर ताला लगा दिया और चाबी अन्दर डाल दी। तीनों युवक विचार करने लगे। एक ने कहा - 'यह कैसे हो सकता है, हम अन्दर हैं और ताला बाहर लगा हुआ है।' वह निराश होकर बैठ गया।

दूसरा कहने लगा - 'मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है।' वह असमंजस की स्थिति में इधर-उधर घूमने लगा। तीसरा चुपचाप कपाट के पास आया और उसे जोर से खींचा तो कपाट खुल गया। बाहर राजा स्वयं खड़े थे। उन्होंने युवक को गले लगाकर तत्काल प्रधानमंत्री बना दिया। युवक को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने बाहर आकर देखा कि राजा ने बिना सांकल लगाए ताला लगाया था। राजा ने कहा, मैं देखना चाहता था कि तुम में से खोलने का प्रयास कौन करता है यानि पुरुषार्थ कौन करता है। केवल तुमने कोशिश की और यही तुम्हारी सफलता का राज है।

संकल्प का बल

डॉ. भीमराव अंबेडकर स्वयं दलित वर्ग के थे। अतः दलितों व शोषितों की पीड़ा को भली-भांति समझते थे। वे चाहते थे कि दलित वर्ग को भी सामान्य वर्ग की तरह जीने का अधिकार मिले। उन्होंने दलित हित में काम करना शुरू किया। इस क्रम में बंबई (अब मुंबई) लेजिस्लेटिव असेंबली ने एक बिल पास किया, जिसके अनुसार तालाब और कुएं सार्वजनिक प्रयोग के लिए खुले कर दिए गए। कानून के अनुसार इन जलस्रोतों पर किसी जाति विशेष का अधिकार नहीं रहा। हर व्यक्ति इनका उपयोग कर सकता था। यह निर्णय भी लिया गया कि कोलाबा जिले में स्थित महानगर पालिका के टैक का पानी दलितों द्वारा प्रयोग में लाया जा सकता है। कानून तो बन गया, किंतु अमल में लाने का साहस किसी में नहीं था। सर्वणों के विरोध का भय था। तब डॉ. अंबेडकर ने घोषणा की कि वे स्वयं कोलाबा टैक का पानी दलितों के लिए खोलेंगे। उनकी इस घोषणा से खलबली मच गई। सर्वण समाज में क्रोध था। डॉ. अंबेडकर ने दलितों का एक समूह बनाया और 19-20 मार्च 1927 को टैक का पानी खोलने का ऐलान किया। निश्चित तारीख पर डॉ. अंबेडकर कोलाबा आए। वहां सर्वणों की भारी भीड़ मौजूद थी। डॉ. अंबेडकर ने सर्वणों का गुस्सा देखा, किंतु बिना किसी घबराहट के शांत भाव से जाकर टैक खोल दिया। पानी की धारा बह निकली। दलितों ने प्रसन्न होकर डॉ. अंबेडकर का जयकारा लगाया और पानी पीने लगे। सर्वणों को अपना क्रोध दबाना पड़ा और डॉ. अंबेडकर दलितों के लिए कुछ बेहतर करने का संतोष लेकर वहां से लौट गए। दृढ़निश्चयों के लिए राह के शूल भी फूल हो जाते हैं। वस्तुतः पक्का इरादा ही वह हौसला देता है, जो बाधाओं से पार ले जाता है।

लक्ष्य प्राप्ति की राह

प्रसंग उन दिनों का है जब थॉमस अल्वा एडिसन फोनोग्राम बनाने के काम में जी-जान से जुटे हुए थे। नए आविष्कार की राह में बाधाएं आती ही हैं, जो एडिसन के सामने भी आईं, किंतु वे हारकर पीछे हटने वालों में से नहीं थे। एक दिन उनके समक्ष भारी-हल्के स्वर निकालने वाली एक मशीन से संबंधित कोई समस्या खड़ी हो गई। उन्होंने यह समस्या अपने एक सहायक जॉर्ज को समझाई और उसे इसके समाधान की दिशा में कार्य करने को कहा। जॉर्ज ने दो वर्ष तक उस समस्या पर काम किया, किंतु वह उसका हल नहीं खोज पाया। अब उसका धैर्य समाप्त हो चुका था। वह एक दिन एडिसन के पास आया और बोला, 'मिस्टर एडिसन! मैंने आपके हजारों डॉलर और अपने जीवन के दो वर्ष इस काम में खपा दिए, किंतु नतीजा कुछ नहीं निकला। यदि आपके स्थान पर कोई और होता तो मैं इतना भी नहीं सकता और काम छोड़कर चला जाता। पर अब मैं धैर्य खो चुका हूँ। मैं इस्तीफा देना चाहता हूँ। कृपया आप इसे स्वीकार करें।' यह कहते हुए उसने इस्तीफा एडिसन की मेज पर रख दिया। एडिसन ने तत्काल उस कागज को फाड़ दिया और बोले, 'मैं तुम्हारा इस्तीफा नामंजूर करता हूँ, जॉर्ज! मेरा विश्वास है कि प्रत्येक समस्या, जो ईश्वर ने हमें दी है, उसका समाधान उसके पास है। हम भले ही उस समाधान तक न पहुंच सकें, किंतु कभी न कभी कोई उसे अवश्य खोज निकालेगा। तुम वापस जाओ और कुछ समय और परिश्रम करो। हो सकता है इतने दिन की मेहनत के बाद सफलता बस मिलने ही वाली हो।' जॉर्ज ने यही किया और समस्या का हल अंततः उसे मिल ही गया। महत्वपूर्ण उपलब्धियों का सफर धैर्य और परिश्रम के साथ ही पूर्ण होता है और अभीष्ट लक्ष्य प्राप्त होता है।

समाज में मूल्यां... पेज। का शेष...

गणेश वंदना की प्रस्तुति से शुरु हुए कार्यक्रम में मुम्बई से आई ज्योति सेठ ने ऐ मालिक तेरे बंदे हम...सुरीले स्वर में गाकर संस्था की सफलता का आधार तैयार किया। इन्दौर स्थित शिवम नृत्य कलाकेन्द्र के कलाकारों ने मन की वीणा से गुंजित ध्वनि मंगलम नृत्य गीत द्वारा उपस्थित जनसमुदाय का स्वागत किया। विशाखापटनम की नर्तनशाला नृत्य अकादमी के कलाकारों ने जयभारती के माध्यम से अपने देश की महिमा का बखान किया। इसी नृत्य संस्था के

कलाकारों ने शिव रूद्रम पशुपतिम नृत्य के जरिए भावना व प्रश्न का अभिव्यक्ति किया। बेलगाव से आई रानी, शिल्पा, अश्विनी, तीनों बहनों के नृत्य ने दर्शकों का मन मोह लिया। सिद्धपुर से आई निधि ने बहुत ही सुंदर लोकनृत्य की प्रस्तुती दी। विशाखापटनम की नृत्य अकादमी के दो और आकर्षक नृत्यों ने सांस्कृतिक संस्था को समापन की ओर अग्रसर किया। मंच संचालन ब्र.कु. विवेक ने किया तथा ब्र.कु. चंद्रकला का मंच संचालन में भरपूर सहयोग रहा।



नागौर-राज.। न्यायाधीश माधवी दिनकर को ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए दादी रतनमोहिनी। साथ हैं ब्र.कु. अनिता व ब्र.कु. लीला।



मुम्बई। मुम्बई में आयोजित अवाई फंक्शन में ब्र.कु. डॉ. रमेश को डॉक्टर ऑफ साइंस डॉक्टरेट अवाई, लाइफ टाइम एचीवमेंट अवाई व गोल्ड मेडल से सम्मानित करते हुए डॉ. मेहर मास्टर मूस तथा शरिया के काउन्सलर, डायरेक्टर हैं।



पण्डोह-मण्डी। आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात् प्रधान संरेंद्र वैद्य तथा पी.ओ. सुभाष गौतम को ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए ब्र.कु. दक्षा। साथ हैं ब्र.कु. रमा व ब्र.कु. गुलाब भाई।



मोतिहारी-विहार। बालगान में नए सेवाकेन्द्र 'प्रभु पसंद भवन' के उद्घाटन अवसर पर आयोजित समारोह में सम्बोधित करते हुए सी.आर.पी.एफ. के डिप्टी कमाण्डेंट विक्रम। साथ हैं ब्र.कु. रानी, ब्र.कु. अनिता तथा ब्र.कु. शशि भाई।



नवसारी-गुज.। रेलवे स्टेशन पर 'व्यस मुक्ति' प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए अरविंद डी. पटेल, स्टेशन मास्टर, संजीव भट्ट, स्टेशन सुप्रीन्टेण्डेंट, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. भानु तथा अन्य।



खोरधा-ओडिशा। विधायक राजेन्द्र कुमार साहूजी को ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए ब्र.कु. अनु।